9

मसीह की भरपूरी का पौलुस का चित्र, 2

कुलुस्सियों 2:10-15

मसीह में भरपूरी (2:10, 11)

[10]और तुम उसी में भरपूर हो गए हो, जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। [11]उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है।

''और तुम उसी में भरपूर हो गए हो'' (2:10)

भरपूर *peplērōmenoi* का अनुवाद है। यह सम्पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है, जिस कारण इसका अर्थ है कि मसीही लोगों को भरपूर किया गया है और वे यीशु में भरपूर किए जाते रहते हैं। आयत 9 में ''परिपूर्णता'' इसी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ भविष्यद्वाणी को ''पूरा करना'' है, परन्तु यहां इसका अर्थ यह है कि कुलुस्से के मसीही अपनी आवश्यकताओं में बिना कमी के थे। यीशु में परमेश्वर का ईश्वरीय स्वभाव पूरी तरह से ''भरपूरी से'' वास करता है, इस कारण वह अपने अनुयायियों को पूरा या ''सम्पूर्ण'' कर सकता है। ''क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह'' (यूहन्ना 1:16)।

उसी में वाक्यांश उस आत्मिक सम्बन्ध का सुझाव देता है, जो मसीही लोगों के लिए पूर्ण होने के लिए आवश्यक है। परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के लिए आवश्यक हर बात केवल उन्हीं के लिए है, जो मसीह में हैं। हर आत्मिक आशीष उसी में है (इफिसियों 1:3)। इन आशिषों में छुटकारा, दण्ड का न होना, परमेश्वर का प्रेम, पवित्र किया जाना, अनुग्रह, नई सृष्टि बनना, मेल, परमेश्वर की धार्मिकता, उसके लहू का लाभ, पापों की क्षमा, उद्धार और अनन्त जीवन शामिल हैं![1] केवल वही लोग उसमें हैं, जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

जो लोग मसीह से बाहर हैं, वे ''मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी नहीं [हैं], और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित'' हैं (इफिसियों 2:12)। यीशु के बाहर लोग अधूरे और ''बहुत दूर'' हैं; ''उसी में'' वह स्थिति बदलाव लाती है, ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो'' (इफिसियों 2:13)।

जो लोग ''मसीह में'' हैं और फल नहीं लाते हैं और यीशु में बने नहीं रहते हैं उन्हें काट कर फैंक दिया और जला दिया जाएगा (यूहन्ना 15:2, 6)। यदि कोई मसीही यीशु से अपने सम्बन्ध को तोड़ लेता है तो वह परमेश्वर के अनन्त जीवन के दान को खो देगा। मसीह में हर किसी को

भरपूर किया जाता है, परन्तु उसके बिना व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है (यूहन्ना 14:5)। मसीह में बने रहने के लिए व्यक्ति के लिए उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है (1 यूहन्ना 2:3-5)।

आत्मिक जीवन पाने और परमेश्वर की स्वीकार्य सेवा करने के लिए व्यक्ति की जो भी आवश्यकता है, यीशु उसे देता है। कोई भी धर्म जो शिक्षक और शिक्षा के बीच अन्तर बनाता है वह गलत नींव पर बनता है। यीशु एक सच्ची नींव है (1 कुरिन्थियों 3:11)। वह मार्ग, सत्य और जीवन अर्थात पिता के पास जाने का एकमात्र मार्ग है (यूहन्ना 14:6)। किसी दूसरे नाम में उद्धार नहीं है (प्रेरितों 4:12)।

नये नियम में नई वाचा की हर सच्चाई है, जिसे यीशु ने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किया (यूहन्ना 16:13; इफिसियों 3:5)। यीशु ने कहा कि उसके वचन नहीं टलेंगे (मत्ती 24:35)। पतरस ने लिखा कि परमेश्वर का वचन सदा तक रहता है (1 पतरस 1:23, 25)। यह वही अर्थात अपरिवर्तित, बिना किसी कांट-छांट या जोड़ के रहता है। परमेश्वर का प्रकाशन सम्पूर्ण है और इसलिए यह उन्हें जो इसकी आज्ञा मानते हैं सम्पूर्ण बनाता है। पवित्र शास्त्र जो पहली सदी में पूरा हो गया था हमें परमेश्वर की सेवा के लिए आवश्यक हर चीज़ देता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

द चर्च ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट ऑफ़ द लेटर डे सेंट्स (मॉरमन लोगों) के लेख बाइबल के पूर्ण होने का इनकार करते हैं। इस प्रकार वे यीशु की शिक्षा की पूर्णता को नकारते हैं। उदाहरण के लिए मॉरमन की पुस्तक में कहा गया है, ''तुम्हारे पास बाइबल है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम यह मान लो कि इसमें मेरे सब वचन हैं; न ही तुम्हें यह मानने की आवश्यकता है कि मैंने और नहीं लिखवाया है'' (2 नेफी 29:10)। यह बात यीशु की शिक्षा के विपरीत है।

मुहम्मद भी अतिरिक्त सच्चाई नहीं ला पाया। यीशु ने प्रेरितों को वचन दिया कि वह उनके पास सहायक अर्थात पवित्र आत्मा को भेजेगा। मुहम्मद के आने से लगभग छह सौ साल पहले उनकी मृत्यु हो चुकी थी। कुरान के द्वारा दी गई मुहम्मद की शिक्षा में पहले से छुपी हुई सच्चाई नहीं है। मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की सक्षमपूर्ण सच्चाई बाइबल में मिलती है।

मसीही लोग मसीह में पूर्ण हैं और उन्हें किसी भी अन्य धर्मसार, नियमावली, वायदे, कथित लेटरडे प्रकाशन या उस व्यवस्था को जो परमेश्वर ने इस्राएल को दी थी, मानने की आवश्यकता नहीं है। सत्य के यीशु के वचन जो प्रेरितों पर प्रकट किए गए थे, टले नहीं हैं। नये नियम में परमेश्वर का वह सारा प्रकाशन है, जो उसने इन अन्तिम दिनों में रहने वालों के लिए यीशु के द्वारा दिया है (इब्रानियों 1:1, 2)। मसीही युग में रहने वालों के लिए न्याय का आधार नये नियम में पाए जाने वाले वचन होंगे, न कि बाद की किसी पुस्तक के वचन (यूहन्ना 12:48)।

''जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है'' (2:10)

इस तथ्य के अधार पर कि यीशु में ईश्वरत्व की परिपूर्णता सदैव वास करती है, ईश्वरत्व का अधिकार उसके पास है, यह अधिकार वर्तमान वास्तविकता है न कि भविष्य की। सो सारी पृथ्वी का सारा अधिकार उसके पास है (मत्ती 28:18), जो उसे परमेश्वर के दाहिनी ओर बिठाए जाने के समय मिला था (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 3:22)। पिता को छोड़ सब वस्तुएं और सब जीव उसके अधीन किए गए हैं (1 कुरिन्थियों 15:27; 1 पतरस 3:22)।

''शिरोमणि'' (*kephalē*)[2] शब्द नियन्त्रण और श्रेष्ठता का सुझाव देता है। मसीह के **सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि** होने का अर्थ है कि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों स्थानों पर संसार में सारा अधिकार उसके पास है। इस कारण कुलुस्सियों को अन्य लोगों से भय खाने या उन अधिकारियों के आगे झुकने की आवश्यकता नहीं थी, जो यीशु और उसकी शिक्षा का विरोध करते थे।

वर्तमान में यीशु विश्व का अकेला अधिकारी है (मत्ती 28:18)। पृथ्वी पर आने से पूर्व वह पिता के साथ अधिकारी था (यूहन्ना 17:5)। वापस आने पर उसका अकेले का शासन खत्म हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। राज्य पिता को लौटा दिया जाएगा। जिसके साथ यीशु अधीन होकर शासन करेगा (1 कुरिन्थियों 15:28)। यह शिक्षा कि यीशु भविष्य में सांसारिक राज्य पर राज करेगा 1 कुरिन्थियों 15:24-28 के और बाइबल के कई अन्य वचनों के विरोध में है।

यीशु अब सारे शासन और अधिकार पर राज करता है। उसका राज्य आज है और मसीही लोग इसके नागरिक हैं (इफिसियों 2:19; कुलुस्सियों 1:13)। उसके शासन के अधीन आ जाने वालों को सिद्ध किया जाता है।

''और उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता'' (2:11)

आयत 10 में यह समझा देने के बाद कि मसीही लोग मसीह में सम्पूर्ण हैं, पौलुस ने उन कुछ आशिषों को बताया, जो हमें उसमें मिली हैं। इस भाग में पहली आशीष **खतना जो हाथ से नहीं होता** है।

अब्राहम के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साथ खतने को विशेष महत्व दिया गया था। परमेश्वर ने कहा कि वह उनका परमेश्वर होगा, जिनका खतना होना था (उत्पत्ति 17:7-13)। यह प्रतिज्ञा खतना रहित इब्रानी बच्चों या खतना रहित अन्यजातियों के लिए नहीं थी; उन्हें प्रतिज्ञा की वाचाओं से निकाला गया था (इफिसियों 2:11-13)। खतना रहित सभी इब्रानी लोगों को इस्राएल से निकाला जाना था (उत्पत्ति 17:14)। नई वाचा के अधीन परमेश्वर उन लोगों का परमेश्वर है, जिन्होंने बपतिस्मे का आत्मिक खतना पाया है। बपतिस्मा लेने पर हम उसकी संतान और उस प्रतिज्ञा के वारिस हो जाते हैं जो उसने अब्राहम को दी थी (गलातियों 3:26-29)।

आयतों 11 से 13 में आत्मिक के साथ शारीरिक की दो तुलनाएं मिलती हैं। *पहली, पौलुस ने शारीरिक और आत्मिक खतने की तुलना की।*

कुलुस्से के लोग जो मसीह में थे, उनका मसीह के खतने के साथ आत्मिक खतना हुआ था ''जो हाथों से नहीं होता।'' यह उस शारीरिक यहूदी खतने से अलग है, जो मानवीय हाथों से किया जाता था। पौलुस यह नहीं सिखा रहा था कि कुलुस्से में मसीही बनने वालों को बपतिस्मा देने के लिए मानवीय हाथों का इस्तेमाल नहीं हुआ था; परन्तु वह यह भी कह रहा था कि ''शारीरिक देह'' को बिना मानवीय हाथों के उतार दिया गया। कुलुस्सियों द्वारा बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़नाए जाकर और जी उठकर परमेश्वर ने शरीर की देह को उतारने में अपना योगदान दिया था (देखें ''और अध्ययन के लिए: क्या 2:11-13 में बपतिस्मा पूरी तरह से खतने के समान है?'')।

इस समय यहूदी खतना अनावश्यक था, क्योंकि कुलुस्सियों को मसीह में सिद्ध कर दिया गया था। वह व्यवस्था जो परमेश्वर ने इस्राएल को दी थी उन्हें इससे अधिक नहीं दे सकती थी।

अपने जीवन और शिक्षा के द्वारा यीशु ने उनकी सब आवश्यकताओं को पूरा किया, जैसा कि पौलुस ने अपने पत्र में पहले कहा था (1:14; 2:10)।

यहूदी खतने में जहां खलड़ी काटकर शारीरिक देह को उतारा जाना आवश्यक था, वहीं बपतिस्मा पाप के दोष को उतार देता है। ''पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि यह [आत्मिक खतना] बपतिस्मा में अनुभव किया जाने वाला परमेश्वर का काम है।''[3]

पौलुस ने कुलुस्सियों की पहले की तीन स्थितियां बताते हुए समझाया कि उन्हें परमेश्वर द्वारा किस प्रकार उतारा गया था:

स्थिति 1–कुलुस्से के लोग आत्मिक रूप में देह में खतना रहित थे और अपनी शारीरिक अभिलाषाओं के कारण पाप से दूषित थे।

सुधार–बपतिस्मे में उनका खतना किया गया था और उनकी शारीरिक देह उतार लिए गए थे।

स्थिति 2–वे आत्मिक रूप में मृत थे।

सुधार–उन्हें परमेश्वर के काम में अपने विश्वास के कारण बपतिस्मे में यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने में शारीरिक रूप में सहभागी होकर एक नये आत्मिक जीवन के लिए यीशु के साथ जिलाया गया था।

स्थिति 3–वे पाप में मरे हुए थे।

सुधार–बपतिस्मा लेने पर उन्हें जिलाया गया था और अपने सारे अपराधों से क्षमा दी गई थी।

कुलुस्से के मसीही लोगों की स्थितियां (2:11-13)

पिछली स्थिति	बदलाव का कारण	परिणाम
आत्मिक रूप में शरीर (शारीरिक आवेगों; आयत 13) में खतना रहित।	बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़नाए व जिलाए जाने से शारीरिक देह को उतार दिया (आयतें 11, 12)।	बतिस्मा लेने और शारीरिक आवेग को उतार देने पर आत्मिक रूप में खतना (आयत 11)।
आत्मिक रूप में मरे हुए (आयत 13)।	बपतिस्मे में मसीह के साथ जिलाए गए (आयत 12)।	परमेश्वर के काम करने में विश्वास के द्वारा मसीह के साथ जीवित किए गए (आयतें 12, 13)।
अपराधों में मरे हुए (आयत 13)।	बपतिस्मा दिया गया (आयत 11)।	सभी अपराध क्षमा किए गए (आयत 13)।

''अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है'' (2:11)

यूनानी संज्ञा शब्द *apekdusis* (जिसका अनुवाद **उतार दी जाती** हुआ है) केवल यहीं पर मिलता है। शब्द का क्रिया रूप, जिसका इस्तेमाल कहीं और पौलुस द्वारा हुआ है, का अनुवाद ''उतारकर'' (2:15) और ''उतार डाला'' हुआ है (3:9)। यह पिछले जीवन से स्पष्ट नाता तोड़ने का सुझाव देता है, चाहे यह रूपक नापसन्द कपड़ों के उतार देने और नंगा होने का है।[4] मसीह के खतने में ''शारीरिक देह अर्थात शारीरिक आवेगों को उतारना, जो लोगों पर नियन्त्रण करके उन्हें पाप करने की परीक्षा में डालती है।''

KJV और NKJV दोनों में है परन्तु बाद के किसी अनुवाद में ''शरीर के पापों की देह'' नहीं है। NKJV के कुछ मुद्रणों में एक टिप्पणी में कहा गया है कि पुरानी हस्तलिपियों में ''पापों के वाक्यांश'' नहीं हैं।

देह (*sōma*) शारीरिक देह के लिए उतना नहीं है, क्योंकि शारीरिक देह को बपतिस्मे के समय उतारा नहीं जाता। रोमियों 6:6 (''पाप का शरीर'') और 7:24 (''इस मृत्यु की देह'' यानी जो प्रकट है) की तरह ''देह'' का अर्थ ''तत्व'' है। कुलुस्सियों 2:17 में यही अर्थ मिलता है। पौलुस हमें समझा रहा है कि शारीरिक आवेगों के मूल अर्थात तत्व का खतना हुआ था। अन्य शब्दों में शारीरिक आवेगों को **मसीह का खतना** होने से उतार दिया गया था।

शारीरिक (*sarx*) का इस्तेमाल नये नियम में अलग-अलग प्रकार से हुआ है (देखें ''और अध्ययन के लिए: क्या 'शरीर' [*sarx*] का अर्थ 'पापपूर्ण स्वभाव' है?'')। कई बार इस शब्द का अनुवाद करना कठिन होता है। sarx के लिए कई अनुवादों की तरह ''शरीर'' शब्द का इस्तेमाल करना[5] इस और अन्य वचनों में (इस अध्याय के अन्त में ''NIV में *sarx* ['शरीर'] वाला चार्ट देखें'') ''पाप पूर्ण स्वभाव'' (NIV) के अर्थ के बजाय कम गुमराह करने वाला है। संदर्भ पर विचार करके पाठक इसके अर्थ को तय कर सकता है। इस शब्द का अर्थ हो सकता है: ...

1. शरीर, अर्थात देह का मांस (लूका 24:39; 1 कुरिन्थियों 15:39)।
2. किसी प्राणी की देह (प्रेरितों 2:31), जिसमें शारीरिक निर्बलताएं शामिल हो सकती हैं (मत्ती 26:41)।
3. सामान्य अर्थ में मनुष्य जाति, मानवीय जीव है (मरकुस 16:17; लूका 3:6; यूहन्ना 17:2; प्रेरितों 2:17)।
4. मानवीय नियम क्या है (रोमियों 1:3; 11:14; प्रेरितों 2:30; गलातियों 4:23)।
5. मानवीय देह की सीमाओं वाला जीवन (रोमियों 8:3)।
6. शारीरिक मापदण्डों की दुनिया (1 कुरिन्थियों 1:26)।
7. मनुष्य जाति के साथ जुड़े हुए शारीरिक आवेग (रोमियों 7:5)।

पुराने मनुष्य को मसीह में नया होने से पहले (2 कुरिन्थियों 5:17) व्यक्ति की शारीरिक भावनाओं (रोमियों 6:6; कुलुस्सियों 3:9) के साथ मिलाया जा सकता है। कालांतर में अपने बुरे कामों के कारण अपने मनों में कुलुस्से के लोग परमेश्वर के शत्रु थे (कुलुस्सियों 1:21)।

इफिसियों की तरह अपने कठोर मनों के कारण वे अज्ञानी थे (देखें इफिसियों 4:18)। उनकी बुराई उनके मनों की स्थिति का परिणाम था; वे अपने पापपूर्ण स्वभाव से अपनी इच्छा के विरुद्ध बुरे नहीं थे या उसके वश में नहीं थे।

यदि मसीह का खतना होने से ''पापपूर्ण स्वभाव'' उतार दिया गया था तो यह बपतिस्मा पाने वालों में अब पापपूर्ण स्वभाव नहीं होना था और उन्होंने पाप नहीं करना था। यदि आदम और हव्वा का स्वभाव उन्हें मना किए गए फल को खाने के बाद पापपूर्ण हुआ तो उस स्वभाव को उतार देने पर लोगों की फल खाने से पहले की आदम और हव्वा वाली भोलेपन की स्थिति बहाल हो जानी थी। उन्हें नंगेपन का पता नहीं चलना था और उन्हें कोई शर्म नहीं आनी थी। (इस पुस्तक में ''और अध्ययन के लिए: क्या हमारा स्वभाव पापपूर्ण है ?'' देखें।)

आयतें 11 से 13 में शारीरिक और आत्मिक के बीच प्रयुक्त दूसरी तुलना यीशु के अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के नये जीवन के बाद और बपतिस्मा लेने के बाद मसीही व्यक्ति के नये जीवन की है। मर जाने के बाद यीशु एक नए शारीरिक जीवन के लिए दफ़नाने के बाद जी उठा। बपतिस्मे में पाप में मरे हुए व्यक्ति को पानी में दफ़ना दिया जाता है और वह एक नए आत्मिक जीवन के लिए जी उठता है।

बपतिस्मे को केवल एक और भौतिक संस्कार के रूप में खतने से नहीं मिलाया जाना चाहिए। पुरानी वाचा के अधीन जिन लोगों का खतना होता था, उन्हें खतना किए जाने के समय मन से ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं होती थी। उसमें किसी दूसरे के शुद्ध करने वाले लहू में विश्वास रखने की कोई आज्ञा नहीं थी और न ही जीवन बदलने की शर्त थी। निश्चय ही पौलुस ने कुलुस्सियों पर ऐसे व्यर्थ सेक्रामेंट को लागू नहीं किया। ''बपतिस्मा विश्वास का सेक्रामेंट है, और सिद्धांत और विचार में *कभी भी* इसकी वस्तु से अलग नहीं किया गया ..., जैसे इसका काम हुआ हो जबकि वास्तव में वस्तु वहां नहीं थी।''[6]

कुलुस्सियों को परमेश्वर के काम करने में विश्वास के द्वारा, बपतिस्मे के द्वारा मसीह में आने पर आत्मिक रूप में खतना किया गया और आत्मिक रूप में जिलाया गया था। एच. सी. जी. माऊल ने यह कहते हुए कि ''बेहतर खतना किया गया, जब तुम 'मसीह में' आए। उनमें पहले से ही वह *ईश्वरीय* वास्तविकता थी'' उनका आत्मिक खतना होने का सही अवलोकन किया।[7]

और कहीं पौलुस संकेत देता है कि मसीह के खतने से कुलुस्सियों के शारीरिक देह से पिछले पाप मिट गए। जिनका बपतिस्मा हो चुका है उन्हें पापपूर्ण कार्यों से अपना सम्बन्ध तोड़ लेना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:8, 9; 2 कुरिन्थियों 7:1)।

जब उन्हें बपतिस्मा दिया जा रहा था तो कुलुस्से के लोग अपना भरोसा उसमें रख रहे थे जो परमेश्वर कर रहा था परन्तु वास्तव में वह उन्हें उनके अपराधों को मिटाकर जीवित कर रहा और उनका आत्मिक खतना कर रहा था।

विश्वास ने बेकार होना था यदि भाइयों ने वह विश्वास अपेक्षित परिणामों को लाने के लिए परमेश्वर के काम में न किया होता। इन परिणामों में आत्मिक खतने, यीशु के साथ नये जीवन के लिए पुनरुत्थान और पापों की क्षमा के द्वारा शारीरिक आवेगों को उतारना था।

यहूदी खतने में शारीरिक देह का केवल छोटा सा भाग ही उतारा जाता था परन्तु मसीह के खतने में सारा पापपूर्ण स्वभाव भी शामिल है। इसका प्रभाव केवल शारीरिक कार्य से नहीं होता

बल्कि शारीरिक कार्य को हृदय से समर्पण करते समय आत्मिक सहभागिता आवश्यक होती है (रोमियों 6:17, 18)। यह हृदय का खतना है (रोमियों 2:28, 29)। मसीह का खतना तब होता है जब व्यक्ति शारीरिक देह, अर्थात पुराने स्वभाव से मुक्त होता है ताकि वह नया व्यक्ति बन सके (रोमियों 6:6)। आत्मिक खतना करने वाला परमेश्वर है (कुलुस्सियों 2:12)।

परमेश्वर ने सदा से हृदय के खतने को ही चाहा है। मूसा के द्वारा परमेश्वर ने लोगों को अपने हृदयों का खतना करने को कहा (व्यवस्थाविवरण 10:16)। यिर्मयाह ने इस्राएल से यही मांग की (यिर्मयाह 4:4; 9:25, 26)। यहेजकेल ने कहा कि परमेश्वर ने उन्हीं लोगों को स्वीकार करना था, जिनके हृदय का खतना हुआ हो (यहेजकेल 44:7, 9)।

आत्मिक खतने की अपनी चर्चा को जारी रखते हुए पौलुस ने इससे मिलने वाली कई आशिषों को बताया, जिसमें नया जीवन, क्षमा और मसीही स्वतन्त्रता शामिल हैं।

मसीह में जीवन और क्षमा (2:12, 13)

[12]और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। [13]और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतना रहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।

आत्मिक खतना तब होता है, जब हम बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़नाए जाते हैं (2:11-13)। लेखक खतने और पानी में डुबकी के दो शारीरिक कार्यों को बपतिस्मे की आत्मिक वास्तविकताओं से मिला रहा था। बपतिस्मे में व्यक्ति यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागिता करके जीवित किया जाता है। पौलुस ने समझाया कि बपतिस्मे में व्यक्ति को पाप में मरे हुए होने से आत्मिक रूप में जीवित किए जाने और पापों की क्षमा पाने में लाया जाता है। बपतिस्मे को उस समय के रूप में चिह्नित किया गया है, जब ये बदलाव होते हैं। आर. सी. लूकस ने लिखा है, ''मसीह में बपतिस्मा लेने का अर्थ उसके जी उठने के साथ-साथ उसकी मृत्यु के लाभों में सहभागी होना है।''[8]

पौलुस ने डुबकी के शारीरिक कार्य के साथ कई आत्मिक वास्तविकताओं को जोड़ दिया। उसने प्रभु-भोज के सम्बन्ध में इसी ढंग को अपनाया। रोटी और दाख के रस का शारीरिक तत्व यीशु की देह और लहू के साथ मसीही व्यक्ति की आत्मिक सहभागिता से जुड़े हुए हैं (1 कुरिन्थियों 10:16)। मान्य होने के लिए बपतिस्मे में वे आत्मिक वास्तविकताएं होनी आवश्यक हैं, जो यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने से जुड़ी हैं, जिससे पुराना मनुष्य दफ़नाया जाकर नया मनुष्य बनने के लिए जी उठे। हे ने कहा है,

> बपतिस्मे में कुलुस्से के लोग और अन्य विश्वासी सचमुच में अपने पुराने वस्त्रों को पीछे छोड़कर और प्रतीकात्मक अर्थ में ''शारीरिक देह'' (2:11), और अपना ''पुराना मनुष्यत्व'' (3:9) उतारकर उतारे जाने की नकल कर रहे होते हैं। पुराने मनुष्यत्व को उतारकर वे शरीर से और उन आत्मिक हाकिमों और अधिकारियों से मुक्त हो जाते हैं,

जिन्होंने उन पर पहले नियन्त्रण किया था या उन्हें पापपूर्ण कार्यों में ले जाते थे।[9]

बपतिस्मे में यीशु के साथ दफ़नाया जाना और जी उठना कोई जादुई सुधार नहीं लाता है। इससे मिलने वाला नया जीवन हृदय से आज्ञापालन करने से आता है (रोमियों 6:4, 17, 18)। बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति यीशु के साथ दफ़नाए जाने और जी उठने से उसके साथ मिल जाता है। जल में से देह के गाड़े जाने और जल में से देह के जी उठने में देह के साथ-साथ हृदय का शामिल होना आवश्यक है। ''परन्तु यह क्रांतिक परिवर्तन किसी मानवीय शक्ति या अन्तरदृष्टि के कारण नहीं आता है। यह परमेश्वर में विश्वास के द्वारा प्रभावी होता है जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाने में अपनी सामर्थ की घोषणा की है।''[10]

''उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए'' (2:12)

अनुवादित शब्द **उसी के साथ गाड़े गए** (*suntaphentes*) अनिश्चित भूतकाल कृदंत है, जिसका अर्थ है कि कार्य मुख्य क्रिया से पहले पूर्ण हुआ था, ''जिलाए गए'' आयत में बाद में आया। और केवल रोमियों 6:4 में यह मिलता है। *sun* (''के साथ'') *thaptō* (''दफ़नाना'') को मिलते हुए यह एक मिश्रित क्रिया है। उपसर्ग *sun* के साथ आरम्भ करते हुए पौलुस ने कई बार मिश्रित क्रियाओं का इस्तेमाल किया। ऐसे ही तीन शब्द आयतें 12 और 13 में इस्तेमाल हुए हैं।[11] **बपतिस्मा में** कुलुस्से के लोग ''उसी के साथ'' सह-दफ़नाए गए, इकट्ठे दफ़नाए गए थे; ''उसी के साथ'' सह जिलाए गए, इकट्ठे जिलाए गए थे और परिणाम और जिस कारण वे ''उसी के साथ'' सह ''जिलाए गए, इकट्ठे जिलाए गए थे।''

बपतिस्मा एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति को उसकी देह को पानी में दफ़नाए जाने और उसे जिलाने की अनुमति देने से दिया जाता है। इस प्रकार से बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने के साथ सहभागिता करता है। जैसे यीशु को लोगों द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया और दफ़नाया गया और परमेश्वर द्वारा जिलाया गया (आयत 12)। वैसे ही बपतिस्मा लेने वाले लोग अपने आपको दूसरों के कार्यों के आगे सौंपते हैं। यीशु ने क्रूस को नहीं बनाया, अपने आपको क्रूस पर कीलों से नहीं ठोका या अपने आप क्रूस पर नहीं चढ़ा। बेशक यीशु ने जो कुछ सहा वह मनुष्यजाति के उद्धार के लिए था, पर क्रूस पर चढ़ाया जाना ऐसा काम था जिसे उसने स्वयं नहीं किया। इसी प्रकार से बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति अपने आपको दफ़नाकर जिलाता नहीं है। इस कारण यह कहना सही है कि बपतिस्मा लेने के द्वारा उद्धार पाने पर व्यक्ति कोई काम नहीं करता है (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। ''उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ'' (तीतुस 3:5; देखें इफिसियों 2:8, 9)।

बपतिस्मा पाने वाले को पानी में दफ़नाने और उसमें से जिलाने में किसी दूसरे के हाथ लगते हैं, परन्तु यीशु बिना हाथ लगाए आत्मिक खतना करता है।

> इस प्रकार बपतिस्मा दिया जाना उसी के साथ *किया जाने* वाला काम है। नूह ने बेशक जहाज़ बनाया परन्तु पानी के द्वारा उसे सुरक्षित यहोवा ही लेकर आया; और

> मूसा और यहोशू ने पानी के बीच में से लोगों की अगुआई की। मसीही बपतिस्मा दिया जाना यशायाह के ''अपने आपको धोकर शुद्ध करो'' जैसा नहीं है, न ही यहूदी मत के सांस्कारिक शुद्धिकरणों *कुमरान के शुद्धिकरणों,* या यहूदी मत धारण करने वालों के यहूदी बपतिस्मे की तरह है; क्योंकि यूहन्ना के बपतिस्मे से अनुकरण करना (जो यीशु ने भी लिया) हमेशा, हर जगह और सबके लिए, किसी *के लिए* किया जाने वाला कुछ काम है।[12]

बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति अपने आपको किसी दूसरे पर उसे पानी में नीचे ले जाने और फिर सफलतापूर्वक बाहर लाने पर भरोसा करते हुए, अपने आपको उसके हाथ में देता है। परन्तु पापों की क्षमा और उद्धार पाने का उसका विश्वास उसे बपतिस्मा देने वाले पर नहीं है, बल्कि उसका विश्वास ''उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे'' (आयत 12)।

कुछ लोग तर्क देते हैं कि इस आयत में आवश्यक नहीं कि अर्थ डुबकी हो। विलियम हैंड्रिक्सन ने अपना विरोध जताया है:

> यदि बपतिस्मे के *माध्यम* के सम्बन्ध में कुछ न किया होता तो चर्चा शायद ही पूरी होती, क्योंकि डुबकी की शिक्षा को मानने वाले विशेष रूप पर ऐसी आयतों के आधार पर ही दावा करते हैं कि डुबकी से बपतिस्मा ही एकमात्र मान्य बपतिस्मा है। उन्हें ''उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए'' शब्दों में पानी में से बाहर आने का ठोस समर्थन मिलता है। परन्तु मसीह में अपने भाइयों के लिए पूरे स्नेह और आदर के साथ मैं यह कहता हूं कि बपतिस्मे के सम्बन्ध में पवित्र शास्त्र भी अन्य अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करता है, जो ऐसे तर्क के आधार पर, बपतिस्मे के उचित *माध्यम* का संकेत देते हुए भी मानी जाएगी। यदि *मसीह के साथ गाड़े गए* (कुलुस्सियों 2:11, 12; रोमियों 6:4) का अर्थ है कि बपतिस्मा डुबकी से होना आवश्यक है, तो *मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए* (रोमियों 6:6) का संकेत यह क्यों नहीं होना चाहिए कि बपतिस्मा क्रूस पर चढ़ाए जाने से होता है, *उसके साथ जुट गए* (रोमियों 6:5 A.V. और मूल) का यह कि लगाए गए और *मसीह को पहन लिया* (गलातियों 3:27) का अर्थ सज्जित होना क्यों नहीं है?[13]

हैंड्रिक्सन के तर्क में त्रुटि है क्योंकि ''बपतिस्मा'' (*baptizō*) शब्द का मूल अर्थ ''डुबोना'' है। बपतिस्मे में यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागिता करने का पौलुस का रूपक केवल इस प्रमाण को बल देता है कि बपतिस्मा डुबकी है।

कई अधिकारी, धार्मिक दायरों के बाहर के भी इस शब्द के इस अर्थ की पुष्टि करते हैं। *द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी* ''बपतिस्मा'' की व्युत्पत्ति का अर्थ ''यू. *baptein,* डुबोना'' देता है।[14] एक और गैर-धार्मिक, निष्पक्ष स्रोत ने बपतिस्मे की यह परिभाषा दी है: ''फ्रेंच यू. *बपतिस्मा,* 'पानी में डुबकी।' अर्थ को समझने के लिए यह दिमाग में आना चाहिए कि बपतिस्मा [मूलतया] डुबकी में होता था।''[15] अन्य स्रोतों का कहना है:

> ''बपतिस्मा'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द *baptizein* को जिसे *baptein* डुबकी या और

''बार-बार या गहनता से डिप करना, डुबकी देना, डुबोना'' है।[16]

प्राचीन समयों में सामान्य ढंग डुबकी का होता था, जैसा कि बपतिस्मे की प्राचीन टंकियों से पता चलता है।[17]

... प्रेरितों ने बपतिस्मे के रूपक को याद दिलाने के लिए ''मर गए'' के स्थान पर ''गाड़े गए'' वाक्यांश को प्रचलन में लाया। जो कि एक समानांतरता है जो बौछार [छिड़काव] से बपतिस्मे की हमारी वर्तमान प्रथा में गायब हो जाती है।[18]

यह ''गाड़ा जाना'' व्यक्ति के पानी में झुकने पर और उसके पानी में से बाहर आने पर ''पुनरुत्थान'' के साथ होता है।[19]

बपतिस्मे में देह और आत्मा में सम्पूर्ण व्यक्ति शामिल होता है। बपतिस्मे में कोई भी बाहर नहीं होता। आत्मा को पूर्ण रूप में यीशु को दिया जाता है, जो विश्वास के द्वारा पुराने जीवन का अंत और एक नये जीवन में प्रवेश का कारण बनता है। इस प्रकार प्राप्तकर्त्ता को आत्मिक रूप में मरे हुओं में से जिलाया जाता है। जल के अन्दर रखे जाने पर पूरी देह भी बपतिस्मे में शामिल होती है। देह के ऊपर थोड़ा सा जल उण्डेलना या छिड़कना पूरी देह के दफ़नाए जाने के रूप में यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने के साथ सहभागिता के विचार को पूरा नहीं करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा सम्पूर्ण व्यक्ति मसीह को समर्पित हो जाता है।

पापों की क्षमा, उद्धार और नये जीवन के लिए बपतिस्मे की अनिवार्यता से बचने के लिए कई तर्क दिए गए हैं। यह तर्क पवित्र शास्त्र के विरोध में हैं, जो बपतिस्मे की अनिवार्यता को बताता है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16; 1 पतरस 3:21)। वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे ने कहा है:

... नये नियम में *baptize* का शाब्दिक और प्रतीकात्मक दोनों अर्थ हैं। शाब्दिक अर्थ है ''डुबोना, डुबकी देना।'' प्रतीकात्मक अर्थ है ''के साथ मिल जाना।'' उदाहरण के लिए यहूदी जाति को लाल सागर में से निकलने के समय ''मूसा का बपतिस्मा'' दिया गया था (1 कुरिन्थियों 10:1, 2)। इस बपतिस्मे में पानी नहीं था, क्योंकि वे सूखी धरती के ऊपर से गए थे। इस अनुभव में जाति को मूसा से मिलाया गया था।[20]

इस कथन के साथ एक स्पष्ट समस्या यह है कि मूसा वह तत्व नहीं था, जिसमें इस्राएलियों को बपतिस्मा दिया गया था। उन्हें समुद्र में से निकलते हुए समुद्र में और धुएं के बादल में समाने पर बपतिस्मा दिया गया था (यशायाह 4:5)। उनका सूखी धरती पर जाना, जो निश्चित रूप में इस बात का संकेत है कि वे पानी में नहीं डूबे थे, उनके बादल और समुद्र में बपतिस्मा पाने और गिरे होने या डूबे होने के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। समुद्र ने दोनों ओर दीवार बना दी थी; वे समुद्र और धुएं के बादल में समा गए यानी उनका बपतिस्मा हो गया।

अन्य लोग आयत 11 का इस्तेमाल मसीह के खतने के रूप में पानी के बपतिस्मे की शिक्षा देने की आपत्ति के लिए यह कहते हुए करते हैं, ''इसमें सम्भवतया मन परिवर्तन ('तुम्हारा खतना हुआ,' अनिश्चितकाल), आत्मा के द्वारा दिए जाने वाले हृदय का खतना है। ...''[21] फिर

यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि आयत 12 में जिस बपतिस्मे की बात है वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा ही है क्योंकि पौलुस ने ''ऐसा खतना, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है'' (आयत 11)।

कुलुस्से की कलीसिया को वही बपतिस्मा मिला था, जो सब जातियों के लिए था (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15, 16), न कि पवित्र आत्मा का सीमित बपतिस्मा जिसकी प्रतिज्ञा प्रेरितों को दी गई थी और उन्हें मिला था (प्रेरितों 1:2-5; 2:4) और जो बाद में कुरनेलियुस को मिला था (प्रेरितों 11:15, 16)। यह तथ्य कि यीशु का आत्मिक खतना बिना हाथ लगाए होता है, इस बात का संकेत है कि उनके पाप मनुष्यों के हाथों से नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामर्थपूर्ण कार्य करने के द्वारा मिटाए गए। उनके ये पाप बपतिस्मे के समय मिटाए गए थे। अलब्रेट ओपके ने सही अवलोकन किया है:

> जब तक संदर्भ किसी और बात का संकेत न दे तब तक बपतिस्मे के नये नियम के हवालों को पानी के बपतिस्मे के रूप में ही माना जाना चाहिए। तकनीकी रूप में बपतिस्मे का अर्थ ''पानी में बपतिस्मा लेना'' किया गया। इस कारण माध्यम को स्पष्ट करना आवश्यक है।[22]

संदर्भ में ऐसी कोई मांग नहीं है कि यहां पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बात हो, जिस कारण पानी के बपतिस्मे पर ही विचार होना चाहिए, जो पौलुस के मन में था।

''उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके,
जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे'' (2:12)

बपतिस्मे में कुलुस्से के भाई यीशु के साथ दफ़नाए भी गए थे और **उसके साथ जी भी उठे** थे। अनुवादित शब्द ''उसके साथ जी भी उठे'' (*sunēgerthēte*) जो एक अनिश्चित कर्मवाच्य सांकेतिक है, पूर्ण हो चुके कार्य को दर्शाता है। यही शब्द 3:1 और इफिसियों 2:6 में मिलता है। बपतिस्मा लेने से उसके गाड़े जाने और जी उठने में सहभागिता करके इन भाइयों ने उसके द्वारा नये जन्म की सहभागिता करके इसे पाया था।

यह उनके **विश्वास** (*pistis*) के कारण सम्भव हो सका था। कुलुस्सियों में पौलुस ने ''विश्वास'' शब्द का यहां पर अन्तिम बार उल्लेख किया है (यह 1:4, 23; 2:5, 7 में भी मिलता है)। यहां विश्वास के विषय में बताए गए कई प्रश्नों पर बात की जानी आवश्यक है।

(1) **परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास** वाक्यांश में *pistis* का अनुवाद ''विश्वास'' के बजाय परमेश्वर के काम करने की ''विश्वासयोग्यता'' अनुवाद होना चाहिए? *pistis* का अनुवाद सम्भवतया कहीं पर ''विश्वासयोग्यता'' नहीं हुआ है। KJV में इसका अनुवाद 239 बार ''विश्वास'' और एक बार ''आश्वासन,'' ''वफ़ादारी'' और ''विश्वास'' हुआ है पर कभी ''विश्वासयोग्यता'' नहीं। NASB में 238 बार ''विश्वास,'' एक बार ''प्रमाण,'' तीन बार ''विश्वासयोग्यता''-मत्ती 23:23; रोमियों 3:3; गलातियों 5:22 में। मत्ती 23:23 और गलातियों 5:22 में ''विश्वास'' के स्थान पर ''विश्वासयोग्यता'' को बेहतर अनुवाद क्यों माना गया? क्या इन आयतों में ''विश्वास'' 2 पतरस 1:5 की तरह मसीही गुण नहीं है?

आइए अब रोमियों 3:3 को देखते हैं: ''यदि कितने विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ। क्या उन के विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी ?'' इस आयत में यूनानी शब्द का अनुवाद उचित रूप में ''सच्चाई'' हुआ है; परन्तु यहां इसके अर्थ के रूप में ''विश्वास'' के रूप में काफ़ी कुछ कहा जाना रह गया है। बार्कले एम. न्यूमैन और न्यूज़ीन ए. निडा ने लिखा है, ''इस प्रश्न का अर्थ, 'क्या इसका अर्थ यह है कि इस कारण परमेश्वर में विश्वास व्यर्थ है ?' ... लेना सम्भव है पर किसी आधुनिक अनुवाद में पौलुस के प्रश्न को इस अर्थ में नहीं लिया जाता।''[23] शायद न्यूमैन और निडा 1973 में लिखते समय 1971 के एक अनुवाद से अपरिचित थे, जिसमें रोमियों 3:3 का अनुवाद इस प्रकार हुआ था: ''क्या उनका विश्वास न करना परमेश्वर के विश्वास को व्यर्थ बना देता है ?'' (LB)।

रोमियों 3:3 में ''विश्वासयोग्यता'' बेहतरीन अनुवाद नहीं है। ''का विश्वास'' कर्मकारक सम्बन्धकारक है जिसका अनुवाद ''में विश्वास'' होना चाहिए। वाक्य में कोई बात ''क्या इसका अर्थ यह है कि इस कारण परमेश्वर में विश्वास व्यर्थ है ?'' से अलग अनुवाद की मांग नहीं करती है। पौलुस यह कह रहा था कि कुछ लोगों का अविश्वास परमेश्वर में दूसरों के विश्वास को व्यर्थ नहीं करता।

आम तौर पर किसी शब्द के सामान्य अर्थ को अनुवाद करते समय वैसा ही रखा जाना चाहिए, जब तक संदर्भ में अपवाद की मांग न हो। कोई भी वचन इस बात की मांग नहीं करता है कि *pistis* का अनुवाद ''विश्वास'' के स्थान पर किसी और प्रकार से किया जाए। 2:12 के संदर्भ में कोई बात इस बात की मांग नहीं करती है कि *pistis* का अनुवाद करने के लिए ''विश्वासयोग्यता'' का इस्तेमाल किया जाए। इसलिए ''परमेश्वर के काम करने में विश्वास'' को ही रखा जाना चाहिए। प्राचीन हो या आधुनिक संस्करण किसी में भी आयत 12 में *pistis* का अनुवाद ''विश्वासयोग्यता'' करने वाले कुछ ही हैं।

(2) क्या यीशु का पुनरुत्थान ''परमेश्वर के काम करने'' के विरोध में है (जिसमें एक-दूसरे को दोहरा रहा और उसे परिभाषित कर रहा है) ? यदि हां तो इसका अर्थ यह होगा कि बपतिस्मा लेने वाले को नया जीवन देने में परमेश्वर की सामर्थ के काम करने में विश्वास रखने के बजाय यीशु के पुनरुत्थान में रखा जाए। ए. एस. पीक ने कहा है:

> ... कहीं पर जहां यह न बताया गया हो कि कौन विश्वास करता है, *pistis* के बाद सम्बन्धकारक विश्वास के उद्देश्य को व्यक्त करता है। हॉफमैन का विचार कि *tener* विरोध का सम्बन्धकारक है और इसका अर्थ कि ''विश्वास, जो परमेश्वर का कार्य है'' संदेह से बिल्कुल बाहर है। क्योंकि विश्वास परमेश्वर के काम करने के प्रति है जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, तु. रोमियों 4:24. परमेश्वर को ऐसे ही दिखाया जाता है, क्योंकि उसी काम के द्वारा उसने मसीह को जिलाया, हमारे अपने आत्मिक अनुभव में भी प्रभावकारी होगा। इसलिए हमारा बपतिस्मा मसीह के साथ वास्तविक आत्मिक दफ़नाए जाने और जी उठने के अलावा और किसी बात का चिह्न नहीं है।[24]

पीक के अनुसार आयत 12 ''विश्वास'' और ''परमेश्वर के काम करने'' को एक जैसा नहीं दिखाती है। इसके बजाय ''विश्वास परमेश्वर के काम करने की ओर ध्यान दिलाता है

जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया।'' यह विश्वास परमेश्वर के काम करने में है ''उस काम करने के कारण जिस के द्वारा उसने मसीह को जिलाया, हमारे अपने आत्मिक अनुभव में भी प्रभावकारी होगा।''

(3) क्या *tēs pisteōs* का अनुवाद ''का विश्वास'' होना चाहिए या ''में विश्वास''? थेयर ने कर्मकारक सम्बन्धकारक के उदाहरण के रूप में ''कर्म [में विश्वास] के सम्बन्धकारक'' के रूप में शामिल किया।[25]

एफ़. विलबर गिंगरिक और फ्रैड्रिक डब्ल्यू. डैंकर ने पौलुस के वाक्यांश की व्याख्या: *परमेश्वर में विश्वास, भरोसा, यकीन* के रूप में की। फिर उन आयतों को दोहराने के बाद जहां इनका उपयोग मिलता है, उदाहरण के लिए मरकुस 11:22 उन्होंने कुलुस्सियों 2:12, का यह अनुवाद किया: ''परमेश्वर के काम करने में विश्वास जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया।''[26] 2000 के संस्करण में डैंकर ने इस आयत का अनुवाद इससे मिलता-जुलता किया।[27]

अधिकतर टीकाकार *dia tēs pisteōs* वाक्यांश को कर्मकारक सम्बन्धकारक मानते हैं।[28] इस कारण इस वाक्यांश का अनुवाद ''में विश्वास के द्वारा'' होना चाहिए।

(4) क्या लोगों को बपतिस्मा लेने के समय अपना विश्वास उसमें रखना आवश्यक है, जो परमेश्वर कर रहा है? हां। बपतिस्मा लेने वाले के लिए परमेश्वर की शक्ति अर्थात उसी शक्ति के काम करने में विश्वास रखना आवश्यक है जिसने यीशु को जिलाया, कि वह उसे एक नया आत्मिक जीवन देगा। नया जीवन तब मिलता है जब वह बपतिस्मे में यीशु के गाड़े जाने और जी उठने में सहभागी होता है। यह तभी हो सकता है यदि बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति का विश्वास उसे आत्मिक रूप में उसका खतना करने और उसे आत्मिक रूप में जीवित करने के परमेश्वर के कार्य में विश्वास है। यह भरोसा कि परमेश्वर यह कर सकता है यीशु को जिलाने में उसके शक्तिशाली काम पर आधारित है। मेरविन विंसेंट ने '' 'परमेश्वर के कार्य का विश्वास' कहा है, यानी वह विश्वास नहीं, जो परमेश्वर काम करता है, बल्कि परमेश्वर के काम करने में आपका विश्वास' जैसा मसीह के पुनरुत्थान में दिखाया गया।''[29]

बपतिस्मा लेने वाले का विश्वास न केवल परमेश्वर की ''शक्ति'' में है, जैसा कि NIV और हिन्दी में अनुवाद किया गया है, बल्कि परमेश्वर के ''काम करने'' (*energeia*) में ही विश्वास है।[30] यदि पौलुस के कहने का अर्थ ''शक्ति'' था, तो उसने यूनानी शब्द *exousia* (''काम करने का अधिकार'') या *dunamis* (''काम करने की शक्ति या योग्यता'') का इस्तेमाल किया होता। इसके बजाय उसने *energeia* का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ हरकत में शक्ति है और इसका अनुवाद अधिकतर मामलों में ''काम करना'' है। जे. इथेल जोनस ने कहा है, '' 'परमेश्वर के काम करने में विश्वास के द्वारा' (RV) ही इस अनुष्ठान को अर्थ और मान्यता दी जा सकती है।''[31] विलियम बार्कले ने इसे इस प्रकार कहा है, ''यह तभी हो सकता था जब कोई परमेश्वर के प्रभावकारी काम करने में विश्वास करे जिसने यीशु को मुर्दों में से जिलाया था और यह कि वह उसके लिए भी यही कर सकता है।''[32]

हरबर्ट एम. कारसन ने टिप्पणी की है:

इस प्रकार मसीह के पुनरुत्थान में दिखाई गई परमेश्वर के काम करने की सामर्थ की विश्वासी के भरोसे की बात है। इसका अर्थ यह है कि तर्क इस प्रकार से होगा कि उन्होंने मसीह के पुनरुत्थान के तथ्य को स्वीकार किया था। यह परमेश्वर की सामर्थ का सांकेतिक प्रदर्शन था, और उस शक्ति पर भरोसा रखकर उन्हें मसीह के साथ मेल में आत्मिक पुनरुत्थान का पता चला था।[33]

अन्य टीकाकार इस बात को मानते हैं:

क्रिसोस्टोम की टिप्पणी है: ''तुम ने विश्वास किया कि परमेश्वर तुम्हें जिलाने के योग्य है, और तुम जिलाए भी गए'' ...। यह केवल यह विश्वास नहीं है कि परमेश्वर ने मसीह को मुर्दों में से जिलाया, बल्कि यह विश्वास है कि परमेश्वर मनुष्य के स्वभाव में काम कर रहा है, इसे नये जीवन के लिए वैसे ही जिलाकर जैसे उसने मसीह को मुर्दों में से जिलाया, और मसीह को जिलाने के कारण।[34]

सो मसीही बपतिस्मा जो उस आत्मिक खतने का उत्तर है, जो मसीह के छुटकारे से मिला है। बपतिस्मा लेने वालों की ओर से निजी स्वीकृति और ग्रहण किए जाने की मांग करता है। इसका अर्थ विश्वास के उस अनुष्ठान से नहीं बल्कि परमेश्वर से जुड़े होना है जो इस ''सेक्रामेंट'' में काम करता है, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के उद्धार करने वाले फल को लागू करता है, जिसमें विश्वासी लोग मर गए और जी उठे, और उन्हें ईश्वरीय जीवन के उस दायरे में रखता है जिसमें पाप पर विजय पाई जाती है (रोमियों 6:7, 9-11)।[35]

आयत 12 के केन्द्रीय भाग का अनुवाद इस तरह हो सकता है ''जब तुम ने बपतिस्मा लिया, परमेश्वर ने तुम्हें भी फिर से जीने के योग्य बनाया, जैसे उसकी सामर्थ के द्वारा हो। उसने तुम्हें जिला दिया, जैसे मसीह के साथ। यह परमेश्वर की शक्ति में तुम्हारे विश्वास के कारण हुआ है।''[36]

विश्वास के कार्य को केवल बपतिस्मे के लिए कहने के रूप में दिखाना गलत है, जिसमें परमेश्वर व्यक्ति के व्यवहार के बावजूद काम करता है, या उस समझ के लिए जो परमेश्वर बपतिस्मे में करता है, या बपतिस्मे के बाद उपयुक्त जवाब देने के इरादे के प्रमाण के लिए।[37]

फिर परमेश्वर को दिखाया जाता है: जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया है, क्योंकि अनुमानित वाक्य चलता है: परमेश्वर ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया है तो वह मुझे भी नये जीवन में ला सकता है (तुलना इफिसियों 1:19, 20)। ऐसे ''परमेश्वर के कार्य करने'' में विश्वास के द्वारा ही यह अनुभव होता है।[38]

बपतिस्मा लेने वाले का विश्वास बपतिस्मा देने वाले, पानी, या बपतिस्मा लेने के कार्य या केवल यीशु के पुनरुत्थान में नहीं है। विश्वास इस भरोसे के साथ कि उसके काम करने से नये मसीही के जीवन में प्रतिज्ञा किए हुए परिवर्तन आ सकते हैं, परमेश्वर पर है। यह विश्वास कि

परमेश्वर कर सकता है और करेगा, यीशु को जिलाने में कार्य में दिखाई गई उसकी सक्रिय शक्ति पर आधारित है। परमेश्वर से तब तक काम करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए जब तक व्यक्ति का उसमें ऐसा विश्वास नहीं है।

परमेश्वर के सामर्थपूर्ण ढंग से काम करने में विश्वास के कारण यीशु के साथ दफ़नाए जाने और जी उठने के तीन परिणाम होते हैं: खतना, नया जीवन और क्षमा। बपतिस्मा लेने के समय, खतना रहित लोगों को आत्मिक रूप में खतना किया जाता है, पाप में मरे हुओं को जीवित किया जाता है और अपराध क्षमा किए जाते हैं। एडुअर्ड शवेज़र ने आयत 12 से आयत 13 में से पौलुस के प्रगतिशील विचार पर सही अवलोकन दिया है, ''अगला वाक्य समझा देता है कि पुनरुत्थान के जीवन से वास्तव में क्या अर्थ है, जो उन्होंने पहले ही पा लिया है: यह पापों की क्षमा के आधार पर खतना रहित से स्वतन्त्र होने का संकेत देता है।''[39]

''तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे'' (2:13)

क्षमा किए जाने से पहले कुलुस्से के लोग पाप में मुर्दो थे। रोमियों को पौलुस ने बताया था, ''पाप जी गया, और मैं मर गया। ... क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला'' (रोमियों 7:9, 11)। याकूब ने लिखा, ''पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु का उत्पन्न करता है'' (याकूब 1:15)। कुलुस्से के लोग पाप में मरे हुए थे क्योंकि उन्होंने पाप किया था, जैसे सब लोगों ने किया है (रोमियों 3:23)। उनकी स्थिति में बदलाव तब हुआ जब बपतिस्मे के समय उन्होंने उन्हें नया जीवन देने और अपने पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर के काम करने में अपना विश्वास रखा।

बेशक पौलुस शारीरिक मृत्यु की बात नहीं कर रहा था। **अपने अपराधों में मुर्दा** से उसके कहने का अर्थ पाप के कारण मसीह में आत्मिक जीवन से अलग होना था (इफिसियों 4:18)। यीशु आत्मिक जीवन का देने वाला है (1 यूहन्ना 5:12), इस कारण जो लोग उसमें नहीं हैं, वे आत्मिक रूप में मुर्दा हैं। उस जीवन को प्राप्त करने के लिए जो मसीह में है (1 यूहन्ना 5:11) विश्वासी के लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है (रोमियों 6:4; गलातियों 3:27)। यह सत्य कि कोई व्यक्ति नये जीवन में प्रवेश करके आत्मिक बेजान होने से तब बचता है, जब वह बपतिस्मा लेता है, आयतें 12 और 13 में पौलुस द्वारा स्पष्ट बताया गया है।

आयत 13 का आरम्भ आयत 13 को आयत 12 से जोड़ते हुए *kai humas* (''और तुम्हें'') के साथ होता है। विषय वस्तु की निरन्तरता के लिए किसी नये पद्य की आवश्यकता नहीं है। NIV और TNIV में वाक्य खत्म करके और आयत 12 के अन्त में पद्य को बन्द करके अनुचित ढंग से आयत 12 को आयत 13 से अलग किया गया है। यह भाषांतर करने का निर्णय है यानी यह वचनों की यूनानी संरचना के आधार पर नहीं है। यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 12 के अन्त में पंक्ति के ऊपर बिन्दु के साथ विराम दिया गया है। ''कॉलन (विराम चिह्न) जो पंक्ति के ऊपर एक बिन्दी है ... अंग्रेज़ी कॉलन और सेमीकॉलन का स्थान लेता है।''[40]

आयतों को एक पद्य के साथ अलग करना आयत 13 से आयत 12 के पौलुस के विचार को अलग करना है, जो दोनों वाक्यों के बीच के सम्बन्ध को नहीं दर्शा पाता। अन्य अनुवादों में पद्य

को तोड़कर इन आयतों को अलग नहीं किया गया है (देखें NASB; KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV)। NAB में ''... परमेश्वर जिसने उसे मुर्दों में से जिलाया।'' ''जब तुम भी पाप में मुर्दा थे। ...'' अनुवाद करके आयत में मज़बूत सम्बन्ध बनाता है। NASB में काफ़ी ज़ोर दिया गया है: ''... परमेश्वर, जिसे उसने मुर्दों में से जिलाया। जब तुम अपने अपराधों में मुर्दा थे। ...''

''अपराधों'' (*paraptō mata*) के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल यीशु (मत्ती 6:14, 15) और पौलुस द्वारा किया गया (रोमियों 4:25)।[41] इन आयतों में इसका अनुवाद ''अपराधों'' हुआ है (कुछ संस्करणों में, ''पापों'' हुआ है)। नये नियम के बाहर इस शब्द का इस्तेमाल ''गलत कदम उठाने के रूपक में, जिसमें कदम सही न पड़े'' किया गया है।[42] पौलुस ने अपराधों शब्द का इस्तेमाल कई बार बहुवचन रूप में किया।

पौलुस ने आयत 13 का आरम्भ सर्वनाम शब्द **तुम्हें** से किया पर इसका अन्त उसने ''और *हमारे* सब अपराधों को क्षमा किया'' लिखकर किया। इस वाक्य रचना की पुष्टि और प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों से होती है। (KJV और NKJV में ''तुम्हें सब अपराध क्षमा किए'' है।) ''हमारे'' का इस्तेमाल करके लेखक ने अपने आपको भी शामिल कर लिया, जैसे बपतिस्मे में यीशु के दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागी होने पर उसके अपराध भी क्षमा किए गए। यीशु ने हनन्याह को पौलुस को उसके पास यह बताने के लिए भेजा था कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6); और हनन्याह ने कहा था, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। पौलुस और कुलुस्से के लोगों ने एक ही प्रकार से नया जीवन और अपने पापों की क्षमा पाई थी।

कुलुस्से के लोगों को बपतिस्मे के समय (2:10), आत्मिक रूप में खतना किए, आत्मिक रूप से जीवित किए जाने और अपने सारे अपराध क्षमा किए जाने पर यीशु में भरपूर किया गया था। उनका यह विश्वास कि जब वे बपतिस्मा लेते थे, तब परमेश्वर यह सब कर रहा था, यीशु को जिलाने में उसके सामर्थ के काम करने पर आधारित था। उन्हें विश्वास था कि यदि परमेश्वर यीशु की मृत देह में नया जीवन डाल सकता है तो वह उन्हें भी आत्मिक मृत्यु से एक नया आत्मिक जीवन दे सकता है। बपतिस्मे में उसके दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागी होने पर यही हुआ।

यहूदी युग में खतनारहित यहूदी और अन्यजातियों को परमेश्वर से अलग और बिना आशा के माना जाता था (इफिसियों 2:11, 12)। यहूदियों द्वारा उन्हें परमेश्वर के लोगों के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था। मसीही युग में जिनका आत्मिक खतना नहीं हुआ वे परमेश्वर के लोग नहीं हैं। आत्मिक खतना बपतिस्मा लेने के द्वारा होता है, इस कारण बपतिस्मा वह बिन्दु है जहां पर व्यक्ति की आत्मिक स्थिति बदल जाती है। विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा व्यक्ति परमेश्वर की संतान बनता है (गलातियों 3:26, 27)।

''उसने तुम्हें भी, उसके साथ जिलाया, और
हमारे सब अपराधों को क्षमा किया'' (2:13)

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की बात से पता चलता है कि बपतिस्मे का मान्य होना

बपतिस्मा लेने वाले विश्वास पर निर्भर है। उसे यह विश्वास होना आवश्यक है कि यीशु को जिलाने में सामर्थपूर्ण ढंग से परमेश्वर का काम करना, उसे नया जीवन और उसके पापों की क्षमा दे सकता है। यीशु को जिलाने में किए गए परमेश्वर के काम पर विश्वास और बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के लिए उसके द्वारा किए जा सकने वाले काम पर विश्वास के बिना बपतिस्मा एक व्यर्थ अनुष्ठान है। परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले काम में विश्वास के लिए व्यक्ति के लिए यह समझना आवश्यक है कि उसके बपतिस्मा लेने के समय परमेश्वर क्या कर रहा है। इस प्रक्रिया में परमेश्वर क्या करता है? प्रेरित ने समझाया है, **उसने तुम्हें भी, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।** परमेश्वर बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के शारीरिक आवेगों को उतारकर, उसे आत्मिक रूप में मसीह के साथ जीवित करके और उसके पापों को क्षमा करके उसका खतना करता है।

आयतें 11 से 13 के अनुसार कुलुस्से के लोगों के जीवनों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव आए थे। (इस पाठ में पहलें आया चार्ट ''कुलुस्से के मसीही लोगों की स्थितियां [2:11–13]'' दखें।) यह बदलाव कुलुस्से के लोगों के विश्वास के कारण आए थे कि परमेश्वर का सामर्थपूर्ण ढंग से काम करना जिससे यीशु को जिलाया गया उनके शारीरिक आवेगों को उतार देगा, उन्हें जीवित कर देगा और उनके पापों को क्षमा कर देगा।

''उसके साथ जिलाया'' (*sunezōopoiēsen*) उस शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ ''किसी के साथ इकट्ठे जीवित करना''[43] है, इस शब्द का नये नियम का और उपयोग केवल इफिसियों 2:5 में है। शब्द के इस विशेष रूप का इस्तेमाल करके पौलुस बीते समय की एक घटना की बात कर रहा था, जो पूरी हो चुकी थी। पीटर टी. ओ'ब्राइन ने लिखा है:

> मसीह के साथ कुलुस्सियों का पुनरुत्थान *पहले ही* हो चुका था: इसका वर्णन अनिश्चित भूतकाल *synēgerthēte* (''तुम्हें जिलाया गया'') के अर्थ में किया जाता है। यह इस बात का सुझाव नहीं देता है कि कुलुस्सियों का परलोक शास्त्र पूरी तरह से पूरा हो गया है ...; उस जीवन के प्रकाशन के रूप में जो वर्तमान में परमेश्वर के साथ मसीह में छिपा हुआ है (3:3, 4) न कि मरे हुओं के पुनरुत्थान के रूप में भविष्य के तत्व की बात मिलती है।[44]

आयतें 12 और 13 में पौलुस ने तीन मिश्रित क्रियाओं का इस्तेमाल किया जिनका आरम्भ sun (जिसका अर्थ ''इकट्ठे'' है) के साथ होता है। बपतिस्मे में कुलुस्से के लोग ''उसके साथ'' दफ़नाए गए और जी उठे थे। अब हम पूर्वसर्ग के रूप में *sun* वाले तीसरे शब्द पर आते हैं। यह पहले दो शब्दों से मिलने वाला लाभ है: उन्हें भी ''उसके साथ इकट्ठे जीवित किया गया।'' उन्होंने बपतिस्मे में शारीरिक रूप में यीशु के साथ दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागिता की थी, इसलिए उन्होंने आत्मिक अर्थ में उसके साथ एक नये जीवन में भी सहभागिता की। एक समय था जब वे आत्मिक रूप में खतनारहित, पाप में मरे हुए और परमेश्वर से अलग थे; बपतिस्मे के बाद वे अपने पापों के हटाए जाने के द्वारा आत्मिक रूप में खतना किए हुए बन गए। पाप के कारण उनका परमेश्वर से अलगाव खत्म हो गया था। ''बाइबल अर्थ में क्षमा का सम्बन्ध मुख्य रूप में परमेश्वर के अपने और मनुष्य के साथ उस सम्बन्ध को बहाल

करने से है जो मनुष्य के पाप के कारण टूट गया है।''[45]

यहां जिलाए जाने की बात किसी भावी पुनरुत्थान की उम्मीद नहीं बल्कि बपतिस्मे में यीशु के पुनरुत्थान की सहभागिता के कुलुस्सियों के अनुभव की बात है। मसीह के साथ जीवित किए जाने के लिए उनके लिए उसके साथ दफ़नाए जाना और जी उठना आवश्यक था। फिर वे उसके साथ नये जीवन में सहभागी हो सकते थे। यीशु की मृत्यु में सहभागिता करने के द्वारा पाप से आत्मिक रूप में मरने के बिना कोई भी नये आत्मिक जीवन में प्रवेश नहीं कर सकता (रोमियों 6:3, 4)। नये जीवन में प्रवेश करने के लिए बपतिस्मा लेने वाले के लिए अंदरूनी सुधार के लिए दिल से आज्ञा मानकर सहयोग करना भी आवश्यक है (रोमियों 6:4, 17, 18)। जब कोई बपतिस्मे में मसीह के साथ जी उठता है तो नया जीवन वर्तमान वास्तविकता बन जाता है।

आयत 13 के संदर्भ में पौलुस ने चाहे बपतिस्मे और पापों की क्षमा को स्पष्ट रूप में जोड़ दिया पर कुछ लोगों ने दोनों को अलग करने की कोशिश की है। यह प्रयास अनुचित है, क्योंकि बपतिस्मे और क्षमा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। प्रेरितों 2:38 में यह सम्बन्ध विशेष रूप में दिखाई देता है, जहां बपतिस्मा ''अपने पापों की क्षमा के लिए [*eis*]'' बताया गया है। कुछ लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि प्रेरितों 2:38 में *eis* का अर्थ ''के कारण'' है। परन्तु असंख्य व्याकरणों और मैकसिकन में इस बात की पुष्टि है कि मरकुस 1:4 और लूका 3:3 के साथ-साथ यहां पर भी ''*eis*'' उद्देश्य को दिखाता है। हाल ही में प्रकाशित और अत्यधिक सम्माननीय फ्रैड्रिक विलियम डैंकर की वाल्टर बाउर की लैक्सिकन के संशोधन में *eis* का वर्णन ''भावनात्मक-संक्षिप्त/उपयुक्त पहलुओं सहित, *में, के लिए ... कि पाप क्षमा हो सकें* लक्ष्यों का चिह्नित करने वाला मत्ती 26:28; तुलना मरकुस 1:4; लूका 3:3; प्रेरितों 2:38''[46] के रूप में किया गया है।

परिभाषा के अनुसार क्षमा के साथ बपतिस्मे से जुड़े संदर्भों में यूनानी शब्द *eis* का अर्थ है ''ताकि,'' ''दिया गया उद्देश्य,'' या ''प्राप्त करना।'' स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि लोगों को बपतिस्मा दिया जाता है, ताकि उनके पाप क्षमा किए जा सकें। अन्य आयतों में पता चलता है कि बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए आवश्यक है (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। एक स्वर्गदूत ने कहा कि यीशु अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। यह इस बात का संकेत है कि ''उद्धार का सम्बन्ध क्षमा से है।'' बपतिस्मा पाकर उद्धार पाने वाले लोगों को उनके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। बपतिस्मा लेने के सब अपराध क्षमा किए जाने की अवधारणा नये जीवन के अन्य वचनों से मेल खाती है, जो दिखाते हैं कि क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा आवश्यक है।

कुलुस्सियों की **सब** गलतियां **क्षमा** कर दी गई थीं। यीशु की क्षमा आंशिक नहीं, बल्कि पूर्ण थी जिसमें उनके हर बुरे काम को क्षमा किया गया था। यीशु का लहू उन सब के पापों को क्षमा कर देगा (1 यूहन्ना 1:7) जो उसकी आज्ञा मानते हैं (इब्रानियों 5:9)। पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों को (प्रेरितों 2:38) और मसीही लोगों के हत्यारे पौलुस को दमिश्क के मार्ग पर यही बताया गया था (प्रेरितों 22:16)। सब पाप पिछले सप्ताह क्षमा हो जाने का अर्थ यह नहीं था कि कुलुस्से के लोग धर्मी जीवन की परवाह किए बिना अपने पिछले शुद्ध किए जाने पर निर्भर रह सकते थे। मसीही लोगों के लिए बपतिस्मे के बाद किए जाने वाले किसी भी पाप की क्षमा की इच्छा करना आवश्यक है।

नये जीवन में आने से यीशु के लिए पवित्र जीवन जीना आरम्भ हो जाना चाहिए। मसीही लोग पाप में इस कारण नहीं लगे रहने चाहिए कि उनके पाप परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा क्षमा किए जा सकते हों (रोमियों 6:1-6)। पाप में लगे रहने वाले लोग अनुग्रह के आत्मा का अपमान कर रहे होते हैं। मसीही लोगों को दिया जाने वाला अनुग्रह उन्हें पाप करने को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं है; यह उन लोगों के लिए है, जो बिना पाप किए जीवन बिताने की कोशिश कर रहे हैं (1 यूहन्ना 2:1, 2)। जमीन से ऊपर ऊंचाई पर पतली रस्सी पर चलने वाला व्यक्ति अपने नीचे सुरक्षा के लिए जाल लगवा सकता है। वह गिरना नहीं चाहता परन्तु वह चाहता है कि यदि वह गिर जाए तो उसे चोट लगने से बचाने के लिए नीचे जाल हो। इसी प्रकार परमेश्वर मसीही लोगों के लिए जो पाप रहित जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं पर कई बार पाप कर देते हैं एक सुरक्षा जाल के रूप में परमेश्वर अपना अनुग्रह देता है।

व्यवस्था के अनुष्ठानों से मसीह में स्वतन्त्रता (2:14)

[14]और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।

''और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर,
और हमारे विरोध में था मिटा डाला'' (2:14)

मिटा डाला, अर्थात ''सामने से हटा दिया'' समझने के लिए हमें **विधियों का वह लेख** के अर्थ को तय करना आवश्यक है। *cheirographon* (''वह लेख'') की परिभाषा ''हस्तलिखित दस्तावेज, [विशेषकर] कर्ज़े का प्रमाण पत्र, *खाता,* कर्ज़े का हिसाब'' के रूप में की जाती है।[47] ''विधियों'' *dogma* शब्द से निकला है जो ''उन नियमों और नियमावलियों का औपचारिक कथन है, जिन्हें माना जाना आवश्यक है। नियमों के औपचारिक सैटों *आदेश, निर्णय, आज्ञा ...* का।''[48]

कई टीकाकार और अनुवादक मानते हैं कि अंग्रेज़ी शब्द ''*certificate of debt*'' का अर्थ ''विधियों'' है। यदि यह सही है तो यह उन विधियों या विधानों की बात है जो हस्तलिखित रूप में मिलते हैं। यहां पर NASB का अनुवाद ''विधियों वाले कर्ज़ का प्रमाण पत्र'' सही अनुवाद है।

टीकाकार इस वाक्यांश की व्याख्या अलग-अलग ढंगों से करते हैं। अन्य विचारों में पांच मुख्य व्याख्याएं आती हैं: (1) पौलुस किसी दस्तावेज़ की बात कर रहा था, जिसमें कुलुस्सियों के विरुद्ध पापों के कर्ज़ की बात लिखी गई थी। (2) वह किसी रुक्के की बात कर रहा था, जो बताए गए करारों को बनाए रखने के लिए लिखित वचन होता है। (3) वह कुलुस्सियों ''के विरुद्ध निरन्तर गवाही के रूप में खड़े कर्ज़दार होने के हस्ताक्षर युक्त अंगीकार'' का संकेत दे रहा था।[49] (4) उसके कहने का अर्थ वह व्यवस्था थी जो परमेश्वर ने इस्राएल को सीनै वर्तन पर दिया, जो क्रूस पर यीशु के कीलों से ठोके जाने से खत्म हो गई या प्रतीकात्मक अर्थ में मर गई। (5) वह दो अलग-अलग अवधारणाओं की चर्चा कर रहा था।

चौथी व्याख्या के सम्बन्ध में हैंड्रिक्सन ने लिखा है, ''लेख या हस्तलिखित दस्तावेज़ स्पष्टतया व्यवस्था ही है (तुलना इफिसियों 2:15)।''[50] उसने समझाया, ''क्रूस के द्वारा मिटाया जाने वाला 'इस पर हमारे हस्ताक्षर वाला कर्ज़ का कागज' नहीं, बल्कि 'इसकी शर्तों वाली आज्ञाओं का नियम' है।''[51]

कारसन ड्रयू ने यही निष्कर्ष निकाला: ''इस प्रकार अपनी विशेष नीतियों के साथ परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर के हमारे कर्ज़दार होने की बात के रूप में खड़ी है। ... परमेश्वर की व्यवस्था न केवल हमें दोषी बताती थी, बल्कि ऐसे दोष के कारण दण्ड की भी पुकार करती थी। इस कारण यह कागज हमारा शत्रु था।''[52]

अगली आयतें 15 से 17 संकेत देती हैं कि पौलुस व्यवस्था की ही बात कर रहा था। आयत 16 का ''इसलिए'' (*oun*) आयत 15 की बात करता है, जो आयत 14 में ''विधियों'' के पौलुस के अर्थ को समझाता है। ''विधियां'' रद्द करके उन्हें क्रूस पर कीलों से ठोक दिया गया है। यीशु ने अधिकारियों और हाकिमों को लूट लिया। इस सच्चाई के आधार पर कुलुस्से के लोगों को हस्तलिखित आदेशों में पाए जाने वाले आदेशों के सम्बन्ध में किसी को उनका न्याय करने की अनुमति नहीं देनी थी। आयत 16 के अनुसार इन में खाने-पीने, पर्व मनाने, नये चांद के मनाने और सब्त को मानने से जुड़े नियम थे। व्यवस्था, जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दी (काफ़िरों के नियम नहीं) में ऐसे नियमों का पालन आवश्यक था।[53] आयत 17 इन धार्मिक रीतियों को आने वाली बातों की केवल परछाईं बताती है। काफ़िरों की रीतियां आने वाली चीज़ों की परछाईं नहीं थी, परन्तु व्यवस्था नये नियम की शिक्षा में मिलने वाली मनुष्य की वास्तविकताओं (इब्रानियों 10:1) की परछाईं थी।

बहुत से टीकाकारों का मानना है कि पौलुस मूसा की व्यवस्था की बात कर रहा था। व्यवस्था वह हस्तलिखित दस्तावेज़ था जिसे मूसा को लिखने की आज्ञा मिली थी (निर्गमन 34:27, 28)। इस्राएलियों को उसमें लिखी सभी बातों को मानना आवश्यक था (व्यवस्थाविवरण 28:58; 30:10; यहोशू 1:8)। यह केवल पुराने नियम के नियमों पर लागू हो सकता था, क्योंकि नया नियम अभी लिखा नहीं गया था।

व्यवस्था किसके अधीन रहने वालों के लिए नापने वाली छड़ी का काम करती थी। खतना किए हुए सब लोग व्यवस्था को मानने के कर्ज़दार थे (गलातियों 5:3)। ''कर्ज़'' व्यवस्था के अधीन रहने वालों का कर्ज़ नहीं था, बल्कि यह ''कर्ज़'' कत्तर्व्य अर्थात कर्ज़ का बोझ था, जो पुरानी वाचा के अधीन रहने वालों के लिए व्यवस्था की हर आज्ञा के बिना पूरी तरह से मानना आवश्यक था। व्यवस्था के अधीन रहने वाले सब लोगों ने इसे तोड़ा था और वे पाप के कारण मृत्यु के योग्य थे (रोमियों 6:23; याकूब 1:13-15)। मृत्यु की सेवकाई के रूप में (2 कुरिन्थियों 3:7-9) जीवन देने के योग्य होने के बावजूद व्यवस्था इसके अधीन रहने वाले सब लोगों के पापों के कारण उन्हें दोषी ठहराती थी (रोमियों 7:9-11)। मूसा के द्वारा दी गई व्यवस्था के नियमों के आधार पर हर व्यक्ति पाप के अधीन बन्द था (गलातियों 3:22)। ''कर्ज़'' व्यवस्था की विधियों को मानने के लिए परमेश्वर के लोगों पर रखा गया कर्त्तव्य था।

''और हमारे विरोध में था'' (2:14)

व्यवस्था **हमारे विरोध में?** कैसे थी? ''विरोध'' (*hupenantios*) शब्द ''कड़े विरोध'' का सुझाव देते हुए केवल यहां पर और इब्रानियों 10:27 में मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''विरोधियों'' किया गया है। व्यवस्था अच्छी थी (देखें रोमियों 7:12), परन्तु मनुष्यजाति पाप से भरी हुई थी। इस कारण व्यवस्था के अच्छे मानक ने मनुष्य के पापपूर्ण होने को प्रकट कर दिया (रोमियों 7:8-11)। इसे न मानने वाले बिना दया के मार डाले जाते थे (इब्रानियों 10:28)। यह इस्राएल के सहने से बाहर था क्योंकि उसमें बिना चूक किए आज्ञापालन की शर्त थी (याकूब 2:10)। इसलिए व्यवस्था जो उन्हें जो इसके अधीन थे, श्राप देती थी (गलातियों 3:10)। पतरस ने यरूशलेम के यहूदी मसीही लोगों को आश्वस्त किया कि व्यवस्था ऐसा जुआ था ''जिसे न हमारे बाप-दादे उठा सके थे और न हम उठा सकते'' (प्रेरितों 15:10) हैं। इसके द्वारा धर्मी ठहराए जाने की चाह करने वाले सब लोग मसीह से कट जाते हैं और अनुग्रह से गिर गए हैं (गलातियों 5:4)।

व्यवस्था के उल्लंघन का दण्ड अधिकतर मामलों में मृत्यु था। दस आज्ञाओं में से सात आज्ञाओं में इन आज्ञाओं को तोड़ने वालों के लिए मृत्यु की मांग की गई थी। इस्राएली लोगों को जो पहली तीन आज्ञाओं में निषेधित अन्य देवताओं की सेवा करते थे, उन्हें मृत्यु दण्ड दिया जाना था (व्यवस्थाविवरण 17:2-5)। यही दण्ड उनके लिए भी था जो सब्त के दिन काम करके चौथी आज्ञा को तोड़ते थे (निर्गमन 31:15), या अपने माता-पिता का आदर करने के बजाय उन्हें मारकर या श्राप देकर पांचवीं आज्ञा को तोड़ते (निर्गमन 21:15, 17) या हत्या करके छठी आज्ञा को (गिनती 35:30, 31), या व्यभिचार करके सातवीं आज्ञा को तोड़ते थे (व्यवस्थाविवरण 22:22-25)।

परमेश्वर द्वारा अब्राहम की संतान को दी गई प्रतिज्ञा की आशिषें देने के बजाय (उत्पत्ति 22:18; गलातियों 3:16) व्यवस्था इसके अधीन रहने वालों को श्राप देती थी (गलातियों 3:10)। ''क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता'' (इब्रानियों 8:7)। व्यवस्था की ''निर्बलता और निष्फलता'' (इब्रानियों 7:18, 19) उसमें जो इसने पूरा नहीं किया, देखी जा सकती है। यह लोगों को स्वतन्त्र नहीं कर सकी (प्रेरितों 13:39), धर्मी नहीं ठहरा सकी (रोमियों 3:20; गलातियों 2:16; 3:11), मीरास नहीं दे सकी (गलातियों 3:18; 1 पतरस 1:3, 4), जीवन नहीं दे सकी (गलातियों 3:21), व्यक्ति को धर्मी नहीं बना सकी (गलातियों 3:21), अनुग्रह नहीं दे सकी (गलातियों 5:4), लोगों को वारिस नहीं बना सकी (रोमियों 4:14), सिद्ध नहीं बना सकी (इब्रानियों 7:19), पाप क्षमा नहीं कर सकी (इब्रानियों 10:4), या दया नहीं दे सकी (इब्रानियों 10:28)।

''और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है'' (2:14)

व्यवस्था ने चाहे अपना काम तो किया पर यह इससे बढ़कर नहीं कर सकी। इस कारण परमेश्वर की योजना के अनुसार पौलुस कह पाया **और उस क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।** उसका कर्त्ता परमेश्वर है, जिसने लिखित आदेशों में पाई जाने वाली व्यवस्था को क्रूस के द्वारा हटा दिया। आयतें 13 से 15 में कर्त्ता ''परमेश्वर'' (आयत 12) ही है। ''उसका

क्रूस,'' जो KJV में मिलता है, संकेत देता है कि ''उसने'' (NASB) जिसने ''इसे सामने से हटा दिया है'' यीशु है। परन्तु ''क्रूस'' जैसा कि हाल के अनुवादों में अधिकतर मिलता है, ''उसके क्रूस'' से बेहतर यूनानी हस्तलिपि का प्रमाण है।

जे. बी. लाइटफुट का मानना था कि पौलुस ने आयत 14 में ''उसने'' के इस्तेमाल से परमेश्वर से मसीह में बदल दिया।[54] कारसन की आपत्ति सही है:

> परन्तु विषय के ऐसे परिवर्तन को मान लेने का अर्थ उस वचन में, जिसमें आरम्भ से अन्त तक विषय स्पष्ट रूप में वही है कि व्याकरण के साथ हस्तक्षेप करना है। इस प्रकार क्या यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि आयत 13 में विषय हमें मसीह के साथ जिलाने वाले के रूप में ''परमेश्वर'' है। परन्तु आयत 13 का कृदंत आयत 14 के कृदंत से समानता रखता है जिसका स्वाभाविक रूप में वही विषय होगा। इसके अलावा *हां हटा दिया* से पहले *और* इसे पिछली आयत के साथ जोड़कर इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि दोनों का विषय एक ही है।[55]

नये नियम की शिक्षा इस बात में एक ही है कि व्यवस्था को बीच में से हटा दिया गया है। कुछ यहूदी मसीही जो अन्यजाति मसीही लोगों पर व्यवस्था को थोपने के इच्छुक थे, उनका कहना था, ''उन्हें खतना कराने और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए'' (प्रेरितों 15:5)। यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों का उत्तर था, ''हम ने उनको आज्ञा नहीं दी थी'' (प्रेरितों 15:24)। स्पष्टतया उनके कहने का अर्थ था कि उन्होंने अन्यजाति मसीही लोगों के लिए अपने बच्चों का खतना कराने या व्यवस्था को मानने का कोई निर्देश नहीं दिया था।

अन्य वचनों में बताया गया है कि मसीही लोग व्यवस्था के अधीन नहीं हैं:

- ''तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो'' (रोमियों 6:14)।
- ''हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं'' (रोमियों 6:15)।
- ''तुम भी व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए'' (रोमियों 7:4)।
- ''जिसके बंधन में हम थे, उसके लिए मरकर अब हम व्यवस्था से छूट गए हैं'' (रोमियों 7:6)।
- व्यवस्था जो पत्थरों पर अंकित की गई थी ''उठ गई'' (2 कुरिन्थियों 3:7-13)।
- ''मैं तो व्यवस्था के लिए मर गया'' (गलातियों 2:19)।
- ''हम अब शिक्षक [व्यवस्था] के अधीन नहीं हैं'' (गलातियों 3:25)।
- हम ''दासी की संतान नहीं'' हैं (गलातियों 4:31, ''सीनै पर्वत से'' दी गई वाचा के सम्बन्ध में; आयत 24)।
- ''... [मसीह ने] अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढहा दिया, और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था, जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, को मिटा दिया ...'' (इफिसियों 2:14, 15)।
- ''[व्यवस्था] लोप हो गई है'' (इब्रानियों 7:18, 19)।
- ''उसने [पहली] वाचा को पुरानी ठहरा दिया है'' (इब्रानियों 8:13; देखें आयत 7)।

- ''वह पहली [वाचा] को उठा देता है'' (इब्रानियों 10:9)।

पुराने नियम में व्यवस्था से बढ़कर बातें हैं, जिसे सामने से हटा दिया गया है। व्यवस्था निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में मिलती है। व्यवस्था का लागू किया जाना पुराने नियम की शेष पुस्तकों में पता चलता है। व्यवस्था की पुस्तकों के अलावा पुराने नियम में इतिहास, भजन संहिता, बुद्धि की बातें और भविष्यद्वाणी है। इनमें मसीही लोगों के लिए बहुमूल्य निर्देश (रोमियों 15:4) और उदाहरण हैं (1 कुरिन्थियों 10:6, 11)। पवित्र शास्त्र में वह स्रोत सामग्री है, जिससे मसीही लोग लाभ उठा सकते हैं, विशेषकर अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में। इन वचनों को मसीही लोगों को समझाने और प्रोत्साहित करने के लिए बार-बार दोहराया और लागू किया जाता है। व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजन संहिता का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए किया जा सकता है कि यीशु ही मसीह है (लूका 24:44; प्रेरितों 28:23), क्योंकि भविष्यद्वाणियों का अधिकतर भाग नये नियम में पूरा हो गया (1 पतरस 1:10-12)। परन्तु अपने नियमों और कायदों के साथ व्यवस्था को अपनी धार्मिक रीतियों और आराधना की पद्धतियों सहित मिटा दिया गया। भविष्यद्वाणियों के पूर्ण रूप से पूरा हो जाने पर उन्हें भी मिटा दिया गया था (मत्ती 5:17, 18)।

आरम्भिक कलीसिया व्यवस्था को मानने के लिए समर्पित नहीं थी इसके बजाय यह प्रेरितों की शिक्षा में बनी रही (प्रेरितों 2:42)। पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु ने प्रेरितों को सब बातें सिखा दीं और उन्हें सारी सच्चाई दे दी (यूहन्ना 14:25, 26; 16:12, 13)। बाद में उसने उन्हें दूसरों को ''उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना'' सिखाने का निर्देश दिया (मत्ती 28:20)। यीशु के चेलों को व्यवस्था नहीं, बल्कि यीशु की शिक्षा मानना सिखाया जाना था।

मसीही लोगों द्वारा व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को माना जा सकता है, परन्तु धर्मी ठहरने के लिए नहीं (प्रेरितों 13:39; गलातियों 2:16, 21)। एक मसीही व्यक्ति हनन्याह, जिसे यीशु द्वारा पौलुस के पास यह बताने को भेजा गया था कि उद्धार पाने के लिए क्या करे (प्रेरितों 9:10, 11; 22:12-16), ''व्यवस्था के मानक'' से एक भक्त मनुष्य था। पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि वह ''व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है'' (प्रेरितों 21:24), मन्दिर में अपने आपको शुद्ध किया था। परन्तु अन्तर यह था कि अन्यजाति मसीही लोगों सहित व्यवस्था को मानना किसी के लिए बाध्य नहीं था। यह मसला प्रेरितों और प्राचीनों के यरूशलेम में इस पर विचार किए जाने के लिए इकट्ठा होने पर सुलझ गया था (प्रेरितों 15:19, 24)।

बहुत से लोग जिनका मानना है कि व्यवस्था आज भी प्रभावी है, यह साबित करने के लिए कि यह मिटाई नहीं गई थी, मत्ती 5:17, 18 का इस्तेमाल करते हैं। उस वचन में यीशु न केवल व्यवस्था की बल्कि भविष्यद्वक्ताओं की भी बात कर रहा था। उसने कहा कि उसके सम्बन्ध में व्यवस्था की क्या, भविष्यद्वक्ताओं की कोई भी भविष्यद्वाणी पूरा हुए बिना नहीं टलनी थी। जब यीशु ने अपने विषय में भविष्यद्वाणियों को पूरा कर दिया तो वह उन्हें फिर से पूरा करने को बाध्य नहीं था। इस कारण वे उठा दी गईं, अर्थात पूरी हो गईं। यीशु ने अपने विषय में सब भविष्यद्वाणियों को पूरा कर दिया (लूका 24:44-48)।

इससे समझ में आ जाता है कि यीशु क्या कह रहा है। दुकान से कुछ चीज़ें उधार खरीद रहे

किसी व्यक्ति का विचार करें। बिल अदा करने के लिए आने पर वह कह सकता है, ''मैं बिल को नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि इसे चुकाने के लिए आया हूं।'' एक भी चीज़ बिना चुकाए नहीं रहेगी, जब तक मैं बिल की शर्त को पूरा नहीं कर देता। ऐसी बात कहकर वह बिल की पाई-पाई चुकाने का वचन देता है। बिल चुका देने के बाद पिछले कर्ज़ के रिकॉर्ड के रूप में तो यह रह सकता है पर अब यह प्रभावी नहीं है क्योंकि इसे पूरा कर दिया गया है। अब इसे दोबारा देने की आवश्यकता नहीं है।

यही नियम यीशु की बातों पर लागू होता है। व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं में उसके सम्बन्ध में की गई कोई भी भविष्यद्वाणी तब तक नहीं टलनी थी, जब तक उसकी हर बात पूरी न हो जाती। मसीह में पूरा हो जाने पर ये भविष्यद्वाणियां प्रभावी नहीं रहनी थी। वे केवल रिकॉर्ड के रूप में रही थीं। उसे उन्हें बार-बार पूरा करने की आवश्यकता नहीं होनी थी।

पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि व्यवस्था को मिटा दिया गया है, तीन बातें कहीं। उसने कहा कि यह ''रद्द कर दी गईं,'' ''सामने से हटा'' दी गईं और ''क्रूस पर जड़'' दी गई। ये सभी शर्तें एक ही सच्चाई को बयान करती हैं। ''हटा दिया'' (*exaleipsas*) का अर्थ है ''मिटा दिया'' बाउर ने इसकी परिभाषा इस आयत में इस्तेमाल के रूप में की है, ''हटा देना'' जिससे कोई चिह्न न रहे, *हटाना, नष्ट करना, पौंछ देना*।[56] ''सामने से हटा दिया'' (*ērken, airō* से) का अर्थ ''हटाना, हटा देना, उठाने के सुझाव के बिना कब्जा करना *नष्ट करना* [आयत 14 पर लागू करने पर]।''[57] इसका अर्थ पूरी तरह से हटा देना है। ''क्रूस पर कीलों से जड़कर'' व्यवस्था की मृत्यु का संकेत देता है। ये तीन बातें इस तथ्य पर ज़ोर देती हैं कि व्यवस्था अब जीवित दस्तावेज नहीं है, उसे मिटा दिया गया या हटा दिया गया है।

आयत 14 में ''क्रूस पर कीलों से जड़कर'' का अर्थ अक्षरश: न लिया जाए। वे पृष्ठ जिनके ऊपर व्यवस्था लिखी गई थी उन्हें कीलों से नहीं जड़ा गया था, बल्कि यह *उस प्रक्रिया* की बात करने के लिए जिसके द्वारा व्यवस्था को बीच में से हटा दिया गया था और यह समझाने के लिए कि *किस समय* इसे हटाया गया था, एक प्रतीक है। जब यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़ा गया तो व्यवस्था मर गई, खत्म हो गई और फिर लागू नहीं रही। इसे तभी उठा दिया गया था, जब नई वाचा को यीशु की मृत्यु के द्वारा लागू किया गया था (इब्रानियों 9:16-18; भी देखें मत्ती 26:28)। ''वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे'' (इब्रानियों 10:9)।

इफिसियों की पुस्तक में पौलुस ने इसी शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित रखा। यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार को तोड़ते हुए उसने कहा कि यीशु ने ''व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों के रूप में थीं'' मिटा दिया (इफिसियों 2:14, 15)। ''विधियों'' के लिए शब्द *dogmata* है, यह वही शब्द है जिसका अनुवाद कुलुस्सियों 2:14 में ''विधियों'' हुआ है। इफिसियों और कुलुस्सियों दोनों में पौलुस द्वारा *dogmata* का इस्तेमाल इस निष्कर्ष का वचन देता है कि दोनों आयतों में उसने एक ही विचार को देना चाहा था। व्यवस्था अब क्रूस पर कीलों से जड़ने, हटा दिए जाने और मिटा दिए जाने के कारण मर गई है।

इन दोनों वचनों में समानांतर विचारों पर ध्यान दें:

इफिसियों 2:14, 15	**कुलुस्सियों 2:14**
''क्योंकि वही ... है जिसने अलग करने वाली दीवार को ढहा दिया''	''विधियों का वह लेख मिटा डाला'' (''सामने से हटा दिया है'')
''अपने शरीर में बैर को नाश करके''	(''उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर'')
''वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों (*dogmasin*) की रीति पर थीं''	''लेख [*dogmasin*] जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था।''

(इन कोष्ठकों में दिए गए वाक्यांश समानताओं पर ज़ोर देने के लिए बदले गए हैं।)

''अपने शरीर में'' (इफिसियों 2:15) वाक्यांश ''क्रूस पर'' (कुलुस्सियों 2:14) कीलों से जड़ने का संकेत हैं। क्रूस पर उसकी देह के कीलों से जड़ने पर व्यवस्था को उसके साथ क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया था। उसने क्रूस पर मरने पर पाप के लिए बलिदान की व्यवस्था की मांगों को पूरा कर दिया। इस प्रकार से हम कहें कि उसने क्रूस पर मरने पर ''अपने शरीर में'' व्यवस्था पूरी कर दी, उसे हटा दिया और उसे मिटा दिया। इस प्रकार से क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय व्यवस्था के शासन का अन्त हो गया।

इन आयतों के शब्द जो यह संकेत देते हैं कि व्यवस्था को हटा दिया गया ''दीवार को ढहा दिया,'' ''अपने शरीर में मिटा दिया,'' ''हटा दिया,'' ''सामने से हटा दिया'' और ''क्रूस पर कीलों से जड़'' दिया। पौलुस कुलुस्सियों को यह बताना चाहता था कि मसीह के द्वारा वह व्यवस्था से छुड़ाया गया था और उन्होंने छुड़ाए रहना था। इसी कारण उसने हमें बताया कि बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार व्यवस्था में नहीं, बल्कि मसीह में हैं (कुलुस्सियों 2:3)। उन्हें व्यवस्था को मानने की विवशता को माने बिना यीशु के पीछे चलना था।

पौलुस ने यह निष्कर्ष निकाला कि मसीही लोग व्यवस्था से छूट गए हैं इसलिए उसे यह कहने की आवश्यकता नहीं थी कि मानवीय संस्थान के किसी अन्य धार्मिक नियमों का कोई अधिकार नहीं है। कुलुस्सियों के समय के ऐसेनी और अन्य लोगों की ऐसी विधियां थीं, जो जानवरों के मांस सहित विवाह करने और कुछ भोजनों के खाने से मना करती थीं। उन पृष्ठभूमियों वाले लोगों के धार्मिक नियमों के बावजूद जो मसीह में आए थे, कुलुस्सियों को केवल यीशु की ओर देखना आवश्यक था। उन्हें किसी मानवीय विधि या व्यवस्था को मानने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यीशु ने अपने चेलों को उन से छुड़ा लिया था।

मसीह द्वारा विरोध को तमाशा बनाया गया (2:15)

[15]और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई।

''और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर'' (2:15)

पौलुस ने यह शब्द स्वयं ही बनाया होगा, जब उसने कहा कि यीशु ने ''प्रधानताओं और अधिकारों'' को **उतार** दिया। क्योंकि यूनानी साहित्य में यह शब्द पहली बार मिलता है। इस कारण इसका अर्थ तय करने में सहायता के लिए कोई समकालीन संदर्भ उपलब्ध नहीं है। प्रेरित ने इस शब्द का इस्तेमाल कृदंत के रूप में एक बार और किया है जिसका अनुवाद ''उतार डाला'' हुआ है (3:9) और एक बार उसने इसका इस्तेमाल किया है (''उतार दी''; 2:11)। ''उतारकर'' (*apekduomai*) का अर्थ कपड़े उतारने की तरह ''उतारना'' ''उतार डालना'' हो सकता है, परन्तु यहां पर ''उतारकर'' का बेहतरीन अर्थ बुराई की शक्तियों को अप्रभावी बनाने में यीशु के द्वारा किया गया परमेश्वर का काम है।

प्रधानताओं और अधिकारों को किसे कहा गया है? उन्हें कैसे उतारा जाना था? उसने किसे उतारा? एच. डरमोट मॅक्डोनल्ड ने सुझाव दिया है, ''कुलुस्सियों की पुस्तक में समझाने के लिए सबसे कठिन आयतों में से यह एक है।''[58] और तीन सवाल खड़े होते हैं: (1) पौलुस ने मध्य स्वर (*apekdusamenos,* ''उतार दिया'') का इस्तेमाल क्यों किया? मध्य स्वर कतृवाच्य के कथन ''मैंने उसे धो दिया'' के विपरीत ''मैंने अपने आपको धो दिया'' जैसे अर्थ को दिखाता है। क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर और यीशु ने उनका कुछ उतार दिया या उन्होंने उन्हें दूसरों का निरस्तीकरण कर दिया? (2) क्या परमेश्वर और यीशु अधीन है? कर्त्ता हैं? (3) किन प्रधनताओं और अधिकारों का निरस्तीकरण किया गया?

मॅक्डोनल्ड ने समीक्षा की है:[59]

1. मसीह ने शरीर को अपने आप से हटाकर और अपने आपको उतारकर प्रधानताओं और शक्तियों का खुला तमाशा बनाया।
2. अपने आप से बुराई की इन विरोधी शक्तियों को उतारकर जो पहले उसे घेरा डाले हुए थीं, मसीह ने अपने क्रूस में अन्त में सदा के लिए उन से उनको पटक दिया।
3. परमेश्वर ने क्रूस के कार्य के द्वारा *हम* से बुराई की विरोधी शक्तियों को उतार दिया।
4. प्रधानताओं और शक्तियों को उतार कर जिनके द्वारा पहले उसने अपनी इच्छा को जताया था (देखें 1 पतरस 3:22), परमेश्वर ने उन्हें विजय में ले जाकर उन्हें मसीह के अधीन करके खुलेआम तमाशा बना दिया।
5. अपने आपको दुष्ट प्रधानताओं और शक्ति के भयानक तन्त्र से वंचित करके जो मनुष्यों को लूट के रूप में परमेश्वर से लूटना चाहती थी, मसीह ने उसे क्रूस की विजय के द्वारा सरेआम बदनाम किया है।

कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि ''उतारकर'' को कृदंत के रूप में मध्य स्वर का बल

देना चाहिए, जिसका अर्थ होगा ''अपने आप से कुछ उतार देना।'' कुछ लोगों का मत है कि पौलुस का हवाला जैसा कि ऊपर (1) और (2) व्याख्याओं में मॅञ्चडोनल्ड द्वारा संकेत दिया गया, मसीह के अपने शरीर पर से बुराई की शक्तियों या यहां तक कि स्वर्गदूतों के विरोध को उनके द्वारा मध्यस्थता की गई व्यवस्था सहित उतारने का मसीह का काम है (देखें प्रेरितों 7:35; गलातियों 3:19; इब्रानियों 2:2)। आवश्यक नहीं है कि यही निष्कर्ष हो क्योंकि जैसा कि क्लिंटन ई. अरनोल्ड ने लिखा है:

> यहां पर कृदंत की बेहतरीन व्याख्या इसे कर्तृ के रूप में जिसमें परमेश्वर करता है और दुष्ट प्रधानताएं और शक्तियां और कर्म समझना चाहिए। यही विजयी जुलूस के बाद के रूपक से अधिक मेल खाती है जो शत्रुओं की केवल पराजय की ही नहीं बल्कि उनके हथियार डालने का भी संकेत देती है। यह 3:9 में उसी कृदंत के इस्तेमाल से बेहतर मेल खाता है ... जिसे कर्तृ के रूप में भी बताया जाता है: ''पुराने मनुष्यत्व को उतार देना।''[60]

इस मामले में काम करने वाला परमेश्वर ही होना चाहिए, जब तक पौलुस विषय को न बदले। पौलुस के विचार के बढ़ने पर ध्यान देने पर हमें यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि आयतें 13 से 15 में ''जिसने'' सर्वनाम परमेश्वर के लिए है (आयत 12) जबकि ''उसमें'' यीशु के लिए है:

- ''*परमेश्वर* की सामर्थ पर विश्वास करके'' (आयत 12)।
- ''उस [परमेश्वर] ने तुम्हें भी उस [यीशु] के साथ जिलाया'' (आयत 13)।
- ''[परमेश्वर ने] उसे सामने से हटा दिया है'' (आयत 14)।
- ''उस [परमेश्वर] ने ... प्रधानताओं और अधिकारों को ... उतारकर [परमेश्वर ने यीशु के द्वारा] उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई'' (आयत 15)।

''प्रधानताओं'' का अनुवाद *archē* शब्द से किया गया है, जिसका अर्थ कई बार ''आरम्भ,'' ''प्राथमिकता,'' या ''स्रोत'' होता है। ''अधिकारों'' (*exousia*) शब्द शक्ति के सही इस्तेमाल का सुझाव देता है (देखें 1:11)। ये यूनानी शब्द पौलुस के लेखों में इकट्ठे और कहीं मिलते हैं (1 कुरिन्थियों 15:24; इफिसियों 1:21; 3:10; 6:12; कुलुस्सियों 1:16; 2:10; तीतुस 3:1)। इन आयतों में उसके कहने का अर्थ कोई भी जाने वाली शक्ति या अधिकार है, जिसका मुनष्य में प्रभाव है। (इफिसियों 6:12 में भ्रष्ट सरकारें और दुष्ट शक्तियां शामिल हैं।) वे परमेश्वर के विरोध में काम करती हैं, मनुष्यजाति का नाश चाहती हैं और उद्धार और उद्धारकर्त्ता की शत्रु हैं। उनकी व्याख्या स्वर्गीय शक्तियों के रूप में जिनके द्वारा व्यवस्था दी गई थी, करने वाले लोग (प्रेरितों 7:38; गलातियों 3:19) इन शब्दों को उससे अलग ढंग से लागू करते हैं, जिसमें आम तौर पर पौलुस करता था।

परमेश्वर ने इन शक्तियों का निरस्तीकरण कैसे किया, उन पर विजय कैसे पाई और उन पर सरेआम तमाशा कैसे बनाया, के ढंग के सम्बन्ध में एक और समस्या खड़ी होती है। उसने यह काम यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उन पर जय पाकर और उनको पराजित करके पूरा

किया। सेनाओं पर इस प्रकार से विजय पाना किसी भी अर्थ में हथियार डालने की भलाई के अर्थात अविद्रोही स्वर्गीय जीवों पर लागू नहीं होगा।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर ने अपने सब विरोधियों को पराजित कर दिया। अपने पुनरुत्थान के द्वारा यीशु ने उन यहूदी अगुओं पर जिन्होंने उसे मृत्यु दी थी, दुष्ट की शक्ति पर और अन्य सभी विरोध करने वाली शक्तियों पर विजय पा ली। यीशु ने पतरस को बताया कि यहूदी सिपाही जो उसे पकड़ने के लिए आए थे उसके ऊपर कोई शक्ति नहीं थी (मत्ती 26:53)। यीशु ने पिलातुस पर प्रकट करके कहा कि संसार के सबसे शक्तिशाली देश के राजसी अधिकार के बाद उस पर कोई अधिकार नहीं था (यूहन्ना 19:11)। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद उसने दिखा दिया कि मृत्यु का उसके ऊपर कोई अधिकार नहीं है (प्रेरितों 2:24)। अपनी मृत्यु के द्वारा उसने शैतान की शक्ति (इब्रानियों 2:14; भी देखें 1 कुरिन्थियों 15:55–57) और उसके दुष्ट दूतों (मत्ती 25:41) अर्थात शैतानी सेनाओं को नष्ट कर दिया।

इस आयत में ''अधिकारों'' उन्हीं को कहा गया है जिनका उल्लेख पौलुस ने पहले किया था कि कुलुस्सियों को ''अंधकार के वश [*exousia*, वही शब्द जिसका अनुवाद आयत 15 में ''अधिकारों'' हुआ है] से छुड़ा'' लिया गया था (1:13; मत्ती 22:53 भी देखें)। इस प्रकार यीशु के द्वारा परमेश्वर ने अंधकार के ''वश'' या ''अधिकारों'' को ''उतारकर'' और कुलुस्सियों को उन से छुड़ाकर पराजित किया। क्रूस पर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा यीशु ने सभी विरोध करने वाली शक्तियों को अपनी बड़ी पराजय दी (यूहन्ना 12:31)। उसकी विजय से उसके सब अनुयायियों को विजय मिल गई है (1 कुरिन्थियों 15:57; 2 कुरिन्थियों 2:14)।

शैतान लोगों को यीशु का विरोध करने के लिए उकसाने की कोशिश करता है। बीज बोने वाले के दृष्टांत में यीशु ने बताया कि शैतान उन हृदयों में से उस वचन को चुग लेता है ताकि वे विश्वास न ला सकें (मत्ती 13:19; मरकुस 4:15; लूका 8:12)। उसने पतरस को यीशु के बारे में गलत कहने को प्रभावित किया (मत्ती 16:22, 23) और उसे गेहूं की तरह पटकना चाहा (लूका 22:31)। उसने यहूदा के द्वारा काम करके उसमें प्रवेश किया जिससे उसने यीशु को पकड़वा दिया (लूका 22:3; यूहन्ना 13:2, 27)। यीशु ने अपना विरोध करने वाले यहूदियों को बताया कि वे अपने पिता शैतान की संतान हैं और शैतान की ही इच्छाओं को पूरा करते हैं (यूहन्ना 8:44)। वह अपनी प्रजा को अपने वश में रखता है, जो उसकी इच्छा पूरी करते हैं (2 तीमुथियुस 2:26)।

यूहन्ना ने लिखा है, ''परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1 यूहन्ना 3:8)। अपने निकट आ रहे क्रूसारोहण और उसके बाद संसार की प्रधानताओं को अपनी विजय को देखते हुए यीशु ने कहा, ''अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा'' (यूहन्ना 12:31)। यीशु ने एक और जगह शैतान को ''संसार का सरदार'' कहा (यूहन्ना 16:11; देखें 14:30)। यीशु ने शैतान के और संसार के हाकिमों के हर उस प्रयास को पराजित कर दिया, जो शैतान की इच्छा को पूरा करना चाह रहे थे।

शैतान सब दुष्टों या दुष्ट आत्माओं का सरदार है (मत्ती 9:34; 12:24; मरकुस 3:22; लूका 11:15) जो ''स्वर्गदूत'' या दूत हैं (*angeloi*; मत्ती 25:41), जिनके द्वारा वह काम करता है। वह आकाश के अधिकार का हाकिम (इफिसियों 2:2) और इस संसार का हाकिम या ईश्वर है

(यूहन्ना 12:31; 2 कुरिन्थियों 4:4)। पौलुस ने शैतानी शक्तियों को ''उस दुष्टता की आत्मिक सेनाएं जो आकाश में हैं'' कहा है (इफिसियों 6:12)। यह ही वे ''प्रधानताएं और अधिकार'' हैं जिन पर परमेश्वर ने यीशु के द्वारा विजय पाई है।

उस सब के द्वारा जो परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के द्वारा किया है उसने उन सभी शक्तियों की सामर्थ जिनके लिए लगता था कि उनका उस पर अधिकार है और उन सब को जिन्हें उसने उनके वश से छुड़ाया है, उतार दिया। यीशु के द्वारा परमेश्वर ने उनकी निर्बलता को सरेआम दिखा दिया और अपनी सामर्थ प्रकट की। मसीही लोगों को भरोसा हो सकता है। मसीह के द्वारा हम शैतान की शक्ति, संसार के सब हाकिमों और उन बुराई करने वालों को, जो उसके वश में हैं विजय पा सकते हैं।

संसार पर जय पाने की विजय विश्वास से मिलती है (1 यूहन्ना 5:4)। कुलुस्से के लोग परमेश्वर के काम करने में अपने विश्वास के कारण बुराई की सब शक्तियों पर विजयी हुए थे। बपतिस्मे में उन्होंने यीशु के पुनरुत्थान की विजय में सहभागिता की थी। अरनोल्ड का अवलोकन है:

> कुलुस्सियों में जब वे आरम्भ में मसीह में आए थे तब परमेश्वर की सामर्थ के कारगर होने पर पहले ही (यूनानी *energeias tou theou*; 2:12) विश्वास किया था अर्थात मुर्दों में से मसीह को जिलाने के लिए पर्याप्त सामर्थ पर विश्वास पहले ही किया था। अब लेखक स्पष्ट तौर पर परमेश्वर ''शक्तियों'' के ऊपर परमेश्वर/मसीह की सामर्थ में वैसा ही विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि पाठक अपने आपको *stoicheia* की शक्ति और प्रधानताओं और अधिकारों की शक्ति के अपने भय के कारण विभिन्न रीतियों को अपने आपको न सौंप दें।[61]

''उसने उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और उसके द्वारा उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई'' (2:15)

परमेश्वर ने यीशु के द्वारा सभी विरोधी शक्तियों पर विजय पाकर उन्हें सरेआम तमाशा बनाकर उनकी निर्बलता को दिखा दिया। ''तमाशा'' से पौलुस का अभिप्राय था कि परमेश्वर ने प्रधानताओं और अधिकारों की वास्तविक प्रकृति अर्थात उनकी शक्तिहीनता और असहायपन को दिखा दिया। ऐसा करके उसने अपनी सामर्थ के सम्बन्ध में उनकी निर्बलता को सरेआम दिखा दिया। यीशु के काम के द्वारा परमेश्वर ने शैतान के अधीन रहने वाली शक्तिशाली सेनाओं को उन्हें नष्ट करके नहीं, बल्कि उन्हें पराजित करके और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के काम के सामने अड़ने की उनकी योग्यता को दिखाकर शक्तिहीन कर दिया।

शैतान भविष्य में नहीं झांक सकता और न ही वे जो उसके सहायक हैं। कुरिन्थियों को लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते'' (1 कुरिन्थियों 2:8)। कालांतर में वे सामर्थी थे, परन्तु संसार की निर्बल और मौलिक बातों के वश में आने से सामने आ गए थे (गलातियों 4:9)। उन्हें अपनी पराजय का आभास नहीं हुआ, जो परमेश्वर ने विजयपूर्ण ढंग से दिखा दिया।

बुराई की सांसारिक शक्तियों और शैतानी शक्तियों को लगा कि वे यीशु की मृत्यु के द्वारा

परमेश्वर को पराजित कर सकते हैं। उसे क्रूस पर चढ़ाकर उन्हें लगा कि उन्होंने उस पर जय पा ली। उन्हें पुनरुत्थान की उम्मीद नहीं थी! अपने दुष्ट कार्यों के कारण वे परास्त हो गए।

यहां पर **उसके द्वारा** (*en autō*) ''it'' (KJV; NKJV; TNIV), ''क्रूस'' (NIV) के बजाय अधिक सम्भावना यीशु के लिए (RSV; NASB) है। इन अनुवादों की टिप्पणियों में संकेत मिलता है कि व्याकरणीय रूप में कोई भी अर्थ सम्भव है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि अर्थ तय करने के लिए आधार संदर्भ ही होगा। अगली आयतों में सब कुछ यीशु में और उसी के द्वारा मिल रहा है (2:9-11, 12, 13), इसलिए परमेश्वर यहां पर संदर्भ के साथ मेल खाने के लिए उसके द्वारा काम कर रहा लगता है।

तमाशा के लिए यूनानी शब्द *deigmatizō* का इस्तेमाल गैर-बाइबली साहित्य में सार्वजनिक अपमान के लिए किया जाता है। नये नियम में और जगह पर यह केवल मरियम को बदनाम करने और उसे अपमानित करने के रूप में सार्वजनिक रूप में बदनाम करने की यूसुफ की अनिच्छा के सम्बन्ध में मिलता है (मत्ती 1:19)।

क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा अपमानित होने और सार्वजनिक रूप में बदनाम होने के लिए बेशक यीशु लोगों के बीच में था (इब्रानियों 12:2), परन्तु परमेश्वर ने उसे वह पराजय लग रही थी, पुनरुत्थान में महिमामय विजय में बदल दिया। मृत्यु का उसके ऊपर कोई वश नहीं था (प्रेरितों 2:24)। यीशु को फिर से जीवित करके परमेश्वर ने बुराई की शक्तियों की व्यर्थता को जिसने उसकी मृत्यु के लिए उकसाया था मिटा दिया।

''जय-जयकार'' का अनुवाद (*thriambeuō*) जो केवल 2 कुरिन्थियों 2:14 में एक बार और मिलता है, विजयी रोमी सेनापतियों की प्रथा का संकेत देता है।

> अब पौलुस रोमी विजय की स्पष्ट तस्वीर के साथ मिलाते हुए शक्तियों के सार्वजनिक दिखावे के विचार पर मनाता है। जब कोई सेनापति युद्ध में अपनी सेना को विजय के लिए ले जाता, तो वापस आने वाली सेना ''विजयी जुलूस'' (*thriambeuo*) के साथ अपनी विजय का जश्न मनाती है। सफल सेनापति जय-जयकार के गीत गाते हुए और अपनी विजय में जयघोष करते अपनी सेवा के आगे-आगे बाज़ारों में से कोलाहल मचाते हुए जुलूस में जाता। पराजित राजा युद्ध की लूट के साथ बचे हुए योद्धाओं के साथ सब लोगों को देखने के लिए तमाशे के रूप में साथ घुमाया जाता।[62]

दुष्ट शक्तियों की पराजय के बाद पौलुस ने उन्हें परास्त और अपमानित सेना के रूप में दिखाने के रूप में चित्रित किया। विजयी सैनिक अभियानों के बाद रोमी सेनापति जनता के सामने अपने बंदियों के वस्त्र उतारकर उन्हें अपमानित करते हुए गलियों में से घुमाते। पराजित शत्रुओं को देखकर लोग यह समझ जाते कि उन्हें उन से डरने की अब कोई आवश्यकता नहीं है।

यीशु के द्वारा दुष्ट शक्तियों को पराजित करने के रूप में परमेश्वर को चित्रित किया गया है। विजयी परेड में उसने अर्थात विजय पाने वाले ने अर्थात जिसे उसने पराजित कर दिया था, सरेआम तमाशा बनाया। इस प्रतीक को शब्दसार नहीं लिया जाना चाहिए। जैसे पराजित होने वालों को एक बड़ी विजय परेड में बेड़ियों में बांधकर गलियों में घुमाया गया हो। इसके बजाय पराजित और परास्त होने वाली बुराई की शक्तियों को नंगा किया गया। ''परन्तु इस आयत में पाए

जाने वाले प्रतीकात्मक उपयोग को ध्यान में रखते हुए, फिर से इस अभिव्यक्ति को उपमा के रूप में चिह्नित करना आवश्यक हो सकता है, उदाहरण के लिए, 'जैसे विजय में आगे बढ़ रहे।' "[63]

लगता है कि इफिसियों 4:8 में पौलुस ने अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करके बुराई की शक्तियों की वैसे ही पराजय का वर्णन किया। जब मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊपर उठा लिया गया, तो सब शक्तियों को चाहे वह भली हों या बुरी, उसके अधीन कर दिया गया (इफिसियों 1:20-22)। बुराई की शक्तियों पर उसके पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के द्वारा विजय पा ली गई।

और अध्ययन के लिए प्रश्न

क्या बपतिस्मा पूरी तरह से 2:11-13 वाले खतने के समानांतर है?

पौलुस ने जब 2:11-13 में खतने और बपतिस्मे की तुलना की तो क्या वह यह कह रहा था कि बपतिस्मा पूरी तरह से खतने के समानांतर है? नहीं, वह केवल एक अर्थ में इसकी तुलना कर रहा था: जिस प्रकार शारीरिक खतने में मांस उतार दिया जाता है, वैसे ही आत्मिक खतने में आत्मा की गंदगी को उतार दिया जाता है। (2:13 पर चर्चा देखें।)

दोनों बातों के बीच समानता का अर्थ यह नहीं है कि दोनों पूरी तरह से समानांतर हैं। बपतिस्मा खतने के विपरीत एक अलग उद्देश्य को पूरा करता है। खतना वाचा की यहूदियों की छाप थी यानी एक स्मरण था कि परमेश्वर उनका परमेश्वर है और वह उन्हें कनान देश देगा

विचार	पुराना नियम (शारीरिक)	नया नियम (आत्मिक)
1. परमेश्वर की संतान में से एक बनने के लिए जन्म	इब्रानी परिवार में शारीरिक जन्म (लैव्यव्यवस्था 12:1, 2)	परमेश्वर के आत्मिक परिवार में **बपतिस्मा** (यूहन्ना 3:5)
2. उस जन्म के बाद लगने वाली मोहर	यह मोहर मनुष्य द्वारा किया जाने वाला **खतना** था जो नर बालक परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में मोहर कर देता था (देखें रोमियों 4:11)।	परमेश्वर द्वारा लगाई जाने वाली यह मोहर पवित्र आत्मा था, जो नये मसीही को परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में मोहर करता है (2 कुरिन्थियों 1:22)।
	यह अब्राहम की संतान के लिए वाचा का एक चिह्न था (उत्पत्ति 17:11)।	पवित्र आत्मा बपतिस्मे द्वारा परमेश्वर की संतान की एक मोहर है (प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27; 4:6)।

(उत्पत्ति 17:7, 8)। बपतिस्मा लोगों को परमेश्वर के पुत्र, अब्राहम के आत्मिक पुत्र बनाता है ताकि वे अब्राहम से की गई स्वर्ग की आशीष की प्रतिज्ञा के वारिस हो सकें (गलातियों 3:16, 29; 1 पतरस 1:3, 4)। पुराना नियम अधिकतर शारीरिक वास्तविकताओं से सम्बन्धित था जबकि नया नियम कई मामलों में उससे मेल खाती आत्मिक वास्तविकताओं को दिखाता है।

इस तुलना से ये बातें प्रतीत होती हैं: बच्चों का *शारीरिक* जन्म के द्वारा इब्रानी परिवार में जन्म लेना आवश्यक था। खतना परमेश्वर की वाचा के लोगों में से एक के रूप में नर बालक पर छाप करने के लिए किया जाता था। बपतिस्मा *आत्मिक* जन्म है जो व्यक्ति को परमेश्वर के आत्मिक परिवार का सदस्य बनाता है। मसीही लोगों को पवित्र आत्मा के द्वारा मोहर किया गया है क्योंकि वे परमेश्वर की संतान हैं (गलातियों 4:6)।

समानांतरता शारीरिक जन्म के बाद मनुष्य द्वारा किए जाने वाले खतने की मोहर और बपतिस्मे में मिलने वाले आत्मिक जन्म के बीच है, जिसके बाद परमेश्वर मोहर के रूप में पवित्र आत्मा का दान देता है। यह समानांतरता बपतिस्मे और खतने के बीच की *नहीं* है। बल्कि एक समानांतरता शारीरिक जन्म और बपतिस्मे के बीच में देखी जाती है, जबकि दूसरी समानांतरता खतने की छाप और पवित्र आत्मा की मोहर के बीच पाई जाती है।

यदि बपतिस्मा पूरी तरह से खतने के समानांतर होता तो खतना किए जाने वालों के विषय में परमेश्वर की शिक्षाएं वैसे ही बपतिस्मा लेने वालों पर लागू होतीं। इस प्रकार निम्न बातें सच होतीं:

1. बपतिस्मा केवल पुरुषों के लिए आवश्यक होता (उत्पत्ति 17:10)।
2. नर नवजात शिशुओं के लिए बपतिस्मा जन्म के आठवें दिन के बाद करना आवश्यक होता (उत्पत्ति 17:12)।
3. उम्मीद की जाने वाली आशीष स्वर्ग की न होकर कनान देश की होती (उत्पत्ति 17:8)।
4. पक्का और दिखाई देने वाला शारीरिक ''वाचा का चिह्न'' होना चाहिए (उत्पत्ति 17:11)।
5. मोल लिए हुए सेवकों का बपतिस्मा आवश्यक होता, चाहे उनका विश्वास और जीवन-शैली जो भी हो (उत्पत्ति 17:13)।
6. बपतिस्मा न लेने वालों को नष्ट कर दिया जाता (उत्पत्ति 17:14)।
7. नवजात शिशुओं से बड़े नर बच्चों को अब्राहम की संतान होने या किसी यहूदी द्वारा मोल लिए दास होने को छोड़ किसी भी पूर्व शर्त के बिना बपतिस्मा दे दिया जाता (उत्पत्ति 17:27)।

यदि बपतिस्मा खतने वाली शर्तों पर ही किया जाना होता तो बपतिस्मा लेने वालों के लिए बाइबल की शर्तों की आवश्यकता न होती। परन्तु नया नियम बताता है कि बपतिस्मे के द्वारा आज उसकी संतान बनने वालों के लिए निम्न बातें करना आवश्यक हैं:

1. परमेश्वर का वचन सुनना (प्रेरितों 2:41; 18:8)।
2. मसीह में विश्वास करना (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 8:12; 18:8)।
3. बपतिस्मे से पहले मन फिराना (प्रेरितों 2:38)।
4. जीवन के नयेपन में चलने के लिए जी उठना (रोमियों 6:4)।

क्या हमारा स्वभाव पापपूर्ण है?

''पापपूर्ण स्वभाव'' की अवधारणा एक धर्मशास्त्रीय अनुमान है कि मनुष्यजाति का जन्म आदम और हव्वा से मीरास में मिले भ्रष्ट स्वभाव के साथ होता है। यह इस निष्कर्ष पर बनी है कि उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाने से पापपूर्ण स्वभाव मिला था (उत्पत्ति 3:6)। परन्तु बाइबल के वचन में ऐसी कोई शिक्षा नहीं है कि उनका स्वभाव भ्रष्ट हो गया है। परमेश्वर ने उन्हें बताया था कि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से खाने पर वे मर जाएंगे (उत्पत्ति 2:17), न कि यह कि उनका स्वभाव शैतान के स्वभाव की तरह बुरा हो जाएगा।

बाइबल के दो कथन इस बात का संकेत देते हैं कि आदम और हव्वा का स्वभाव भ्रष्ट नहीं हुआ था। (1) *उत्पत्ति 3:7-10.* फल खाने से पहले वे नंगे थे पर उन्हें शर्म नहीं आती थी (उत्पत्ति 2:25)। फल खाने के बाद उन्हें समझ आ गया कि वे नंगे हैं। हमने नंगेपन को दिखाने के बजाय, जो भ्रष्ट लोग दिखा देते, उन्हें शर्म आने लगी; वे छिपकर अपने आपको ढांपने की कोशिश करने लगे। यदि उनका स्वभाव भ्रष्ट हो गया था तो उनके विवेक उन्हें शर्मिंदा होने या ढांपने के लिए कुछ ढूंढ़ने की कोशिश न करते। (2) *उत्पत्ति 3:22.* परमेश्वर ने कहा, ''मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।'' परमेश्वर को भले और बुरे का ज्ञान है पर फिर भी वह भ्रष्ट नहीं है। आदम और हव्वा को भले और बुरे का ज्ञान होने पर उन्हें नैतिक पसन्दों को चुनना था। फल खाकर उन्होंने नैतिक भोलेपन की अवस्था को त्याग दिया और नैतिक समझ की अवस्था में प्रवेश किया। उसके बाद से उन्हें भले और बुरे में से चुनाव करना था। लगभग उसी समय उन्होंने अपने आपको ढांपने की एक अच्छी नैतिक पसन्द चुनी, जो इस बात का संकेत है कि वे बुराई नहीं बल्कि भलाई करने के इच्छुक थे।

यह कहने के बजाय कि आदम और हव्वा बुरे बन गए थे, हम तर्कसंगत रूप में यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उन्होंने *अच्छा* स्वभाव अपना लिया था; क्योंकि उन्हें *बुरे* के साथ-साथ *भले* का ज्ञान हो गया था। तौभी मना किए गए वृक्ष का फल खाने के परिणामस्वरूप उनकी संतान यानी सब लोगों में बड़े होने पर भले और बुरे का ज्ञान आ जाता है (व्यवस्थाविवरण 1:39) और अन्त में उन्हें शारीरिक मृत्यु का सामना करना पड़ता है। हम आदम और हव्वा के पाप के परिणामों को भुगतते हैं, परन्तु हम पर उनके दोष का आरोप नहीं है। हमारे लिए उसके परिणाम यह हैं कि हम मरेंगे (1 कुरिन्थियों 15:22) और हमें नैतिक पसन्द चुननी पड़ेगी (यशायाह 7:16)।

कुलुस्सियों 2:11 में ''मसीह का खतना'' खून में पाए जाने वाले पापपूर्ण स्वभाव को नहीं हटाता, क्योंकि मनुष्यजाति के पास पापपूर्ण स्वभाव को हटाने की मीरास नहीं है। इसके बजाय आत्मिक खतना गलत नैतिक और आत्मिक पसन्दों के कारण शारीरिक अभिलाषाओं और पापपूर्ण कार्यों को अपने आपको सौंप देने के द्वारा बढ़ी हुई और इकट्ठा हुई गंदगी को उतार देता है।

सबने पाप किया है परन्तु रोमियों 3:9, 19, 23 ''सब'' केवल उन्हीं लोगों को शामिल करने के लिए समझा जाना चाहिए जिनकी चर्चा इस वर्ग में हो रही है। ''सब'' ने जिन में पाप करने की क्षमता है, पाप किया है, परन्तु उन ''सब'' ने नहीं जिनमें पाप करने की क्षमता नहीं है (यूहन्ना 9:41)। बालकों और कुछ वयस्क लोगों में सही और गलत को समझने की मानसिक योग्यता की कमी होती है। स्वर्ग का राज्य छोटे बच्चों का है (मत्ती 19:14); इस कारण उन्हें राज्य में प्रवेश के लिए दोबारा जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं है (यूहन्ना 3:5)।

पौलुस ने लिखा कि जीवन में नैतिक परिपक्वता तक पहुंचने वाले सब लोगों ने पाप किया है (रोमियों 3:23) और उन्हें ''मसीह का खतना'' की आवश्यकता है। शारीरिक आग और उन से होने वाले पाप केवल उन्हीं लोगों के मिटाए जाते हैं जो ''मसीह का खतना'' की समझ रखते और आत्मिक रूप में उसमें भागीदार बनते हैं।

रोमियों 7:18-23 की गलत व्याख्या उन लोगों द्वारा की जाती है, जो यह सिखाते हैं कि मनुष्यजाति को पापपूर्ण स्वभाव मीरास में मिला है। पौलुस ने यह नहीं कहा कि पापपूर्ण स्वभाव उससे पाप करवा रहा है। इसके बजाय उसने कहा, ''तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, बरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है'' (रोमियों 7:17)। यूनानी भाषा में यहां पर ''नहीं ... वरन'' संरचना का इस्तेमाल हुआ है। यह संरचना (*mē... alla* या *ou ... alla*) नये नियम में कई बार मिलती है (यूहन्ना 6:27; 1 तीमुथियुस 5:23; 1 पतरस 3:3, 4)। ज़ोर वाक्य के दूसरे भाग में है। पर पहले भाग को निकालने पर नहीं। पौलुस कह रहा था, ''न केवल मैं इसे कर रहा हूं, बल्कि पाप जो मुझ में वास करता है।''

पौलुस इस बात को स्वीकार कर रहा था कि उसने पाप किया है; परन्तु उसकी पाप करने की इच्छा नहीं थी (रोमियों 7:15-21)। यदि उसका स्वभाव भ्रष्ट होता तो वह बुराई करने की इच्छा रखता। उसे पाप करने के लिए उकसाने वाला उसका पापपूर्ण स्वभाव नहीं बल्कि पाप था। रोमियों 6:16 में पहले पौलुस ने पाप के दास होने के स्वभाव पर चर्चा की थी। जैसा कि यीशु (यूहन्ना 8:34) और पतरस (2 पतरस 2:19) भी थे। अपने जीवनों में सब ने पाप को आने दिया है, इस कारण सब को पाप के साथ जूझना पड़ा है, पर पापपूर्ण स्वभाव के साथ नहीं।

क्या ''शरीर'' (*sarx*) का अर्थ ''पापपूर्ण स्वभाव'' है?

यूनानी भाषा के नये नियम में *sarx* के विभिन्न रूप लगभग 150 बार मिलते हैं। इनमें से अधिकतर वचनों में ''पापपूर्ण स्वभाव'' का अर्थ सम्भवतया नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए यीशु *sarx* ''देहधारी'' हुआ (यूहन्ना 1:14); उसका ''मांस'' हमारे जीवन की रोटी है (यूहन्ना 6:51) जिसे जीवन पाने के लिए (आत्मिक रूप में) खाना हमारे लिए आवश्यक है (यूहन्ना 6:53-56)। यीशु की ''देह'' सड़ने नहीं पाई (प्रेरितों 2:31)। वह ''शरीर'' के भाव से दाऊद की और पुरखाओं की संतान था (रोमियों 1:3; 9:5)। यीशु ''शरीर'' में प्रकट हुआ परमेश्वर था (1 तीमुथियुस 3:16) और उसे ''शरीर'' में मृत्यु दी गई (1 पतरस 3:18)। ''पापपूर्ण स्वभाव'' इन संदर्भों से मेल नहीं खाता है।

जब *sarx* का इस्तेमाल किसी व्यक्ति के लिए एक प्राणी के रूप में हो जिसका शरीर पवित्र या बुरे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता हो तो इसका अर्थ उसके भले या बुरे

''शारीरिक आवेग'' होता है। यह अर्थ केवल संदर्भ के अनुसार तय किया जा सकता है (प्रेरितों 2:26; रोमियों 8:7)। लोगों द्वारा नैतिक निर्णयों का सामना करने पर आम तौर पर ऐसे आवेग बुरे ही होते हैं; इस कारण इसका अर्थ सकारात्मक से अधिक आम तौर पर नकारात्मक होता है।

किसी भी बड़े लैक्सिकन शब्दकोष, या विश्वकोष में *sarx* की परिभाषा ''पापपूर्ण स्वभाव'' के रूप में नहीं की गई है। ''पापपूर्ण स्वभाव'' का सबसे निकट हवाला रोमियों 7:5 में ''पापों की अभिलाषाएं'' दिया गया है। उस संदर्भ में भी पौलुस ने पापपूर्ण ''शरीर'' (*sarx*) की नहीं बल्कि पापपूर्ण ''अभिलाषाएं'' (*pathēmata*) की बात की। शरीर के अंगों के द्वारा काम करके पापपूर्ण अभिलाषाओं को ''शरीर'' ने नहीं, ''व्यवस्था'' ने उकसाया।

मनुष्य की अभिलाषाओं के लिए *sarx* के सम्बन्ध में लैक्सिकनों में इस प्रकार परिभाषाएं दी जाती हैं: ''[शरीर] पाप के इतना अधीन है कि शरीर जहां भी है, वहां पाप के सब रूप [उसके जैसे] होते हैं, और *sarx* में कोई भली वस्तु नहीं रह सकती है।''[64] ''पापपूर्ण शरीर'' का सुझाव एक सम्भव अनुवाद के रूप में किया जाता है परन्तु कहीं पर भी ''पापपूर्ण स्वभाव'' का इस्तेमाल नहीं होता।

Sarx की अपनी चर्चा को संक्षिप्त करते हुए एडुवर्ड ने लिखा है, ''इस कारण शरीर वह दायरा नहीं है जिसे अन्य सांसारिक वस्तुओं से अलग किया जाए और जो सहज रूप में [अपने आप में] बुरा हो या विशेष रूप में खतरनाक हो। यह बुरा केवल तभी बनता है जब मनुष्य इसे अपने जीवन का आधार बनाता है।''[65]

मॅक्डोनल्ड का अवलोकन सही है:

> फिर भी ''शरीर'' अर्थात *sarx* परमेश्वर की सृष्टि के रूप में मनुष्य की निर्बलता के लिए नाम नहीं है। यह सत्य है कि शरीर नाशवान है (1 कुरिन्थियों 15:53, KJV) और मरणहार है (2 कुरिन्थियों 10:2)। तौभी पौलुस sarx के अपने विचार अधिक सकारात्मक नैतिक शरीर अपने आप में बेशक पापपूर्ण नहीं है, परन्तु यह मनुष्य की प्रकृति का वह भाग है जो पापपूर्ण अवसर देता है। यह पापपूर्ण कार्य करने का तैयार आधार उपलब्ध कराता है। *Sarx* मनुष्य के अन्दर वह तत्व है जिसके ऊपर पाप टकराता है और जिससे यह अपने आपको जोड़ लेता है। जिसका अर्थ यह है कि चाहे पौलुस तत्व की आवश्यक बुराई की किसी ज्ञानवादी धारणा की शिक्षा नहीं देता पर वह शरीर को किसी प्रकार बुराई की उपस्थिति से ठहर जाने के रूप में मानता है, जो ''शरीर के कामों'' में निकलता है (तुलना गलातियों 5:19; आदि)।[66]

मानवीय जीव बेशक निर्बल हैं और उनसे पाप हो जाता है, पर हमें पापपूर्ण स्वभाव के द्वारा बुराई करने को विवश नहीं किया जाता। जैसे बहुत पहले यहोशू ने चुनौती दी थी (यहोशू 24:15), हमें भी *चुनना* आवश्यक है कि हम किसकी सेवा करेंगे।

क्या नवजात शिशुओं को बपतिस्मा दिया जाना चाहिए?

कुलुस्सियों 2:11, 12 का इस्तेमाल इस बात के ''प्रमाण'' के रूप में किया जाता है कि

नवजात शिशुओं को बपतिस्मा दिया जाना चाहिए। यह समझाने की कोशिश करते हुए कि उसे क्यों लगता है कि नवजात शिशुओं का बपतिस्मा किया जाना चाहिए, विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है:

> मैं यहां पर एक स्पष्ट *अभिप्राय* की बात कर रहा हूं। मोटे तौर पर अन्तर *मूल* खतने और *बिना हाथ लगाए खतने* जैसा कि समझाया गया है, हृदय के खतने के बीच अन्तर का है। परन्तु अभिप्राय भी स्पष्ट है। इसलिए यह बात सही है: ''इसका अर्थ यह है कि क्योंकि बपतिस्मा खतने के स्थान पर आया है (कुलुस्सियों 2:11-13) इसलिए बच्चों को परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचा के वारिसों के रूप में बपतिस्मा दिया जाना चाहिए'' (*फॉम फॉर द बैपटिज़्म ऑफ़ इनफैंट्स इन साल्टर हिम्नल ऑफ़ द क्रिश्चियन रिफॉर्म्ड चर्च,* ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन, 1959, पृष्ठ 86)। परमेश्वर द्वारा अब्राहम के साथ वाचा बांधे जाने के समय बच्चों को शामिल किया गया था (उत्पत्ति 17:1-14)। अपने आत्मिक पहलुओं में यह वाचा नये युग में जारी थी (प्रेरितों 2:38, 39; रोमियों 4:9-12; गलातियों 3:7, 8, 29)। इसलिए बच्चे आज भी शामिल हैं और उन्हें आज भी वह प्रतीक मिलना चाहिए, जो कि वर्तमान युग में पाया जाता है, जैसा कि कुलुस्सियों 2:11, 12 में पौलुस स्पष्ट करता है कि यह बपतिस्मा है।[67]

प्रेरितों 2:39 वाली ''संतानों'' नवजात शिशु नहीं, बल्कि संतान हैं। पतरस के कहने का अर्थ यदि नवजात शिशु होता तो *brephos* (''नवजात'') या *paidion* (''छोटा बच्चा'') के रूप का इस्तेमाल होना था। पतरस ने *teknon* का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ ''वंश'' या ''संतान'' है। पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा के दान की प्रतिज्ञाएं इस्राएलियों की संतान के लिए थीं। ये आशिषें केवल उन्हीं के लिए हैं जो बपतिस्मा लेने से पहले मन फिरा लेते हैं (प्रेरितों 2:38)। पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा नवजात शिशुओं के लिए नहीं थी।

कुलुस्सियों 2:11-13 नवजात शिशुओं के बपतिस्मे को बढ़ावा नहीं देता है। इसके विपरीत यह वचन इसे निकाल देता है। शारीरिक आवेगों वाले शरीर को बपतिस्मे के आत्मिक खतने में उतार दिया जाता है; परन्तु नवजात शिशुओं में कभी शारीरिक आवेग नहीं आए हैं न ही वे शरीर के काम कर सकते हैं (गलातियों 5:19-21)। भोलेपन के अपने आरम्भिक वर्षों में उन्हें भले और बुरे का कोई ज्ञान नहीं है (व्यवस्थाविवरण 1:39)। इस नैतिक अंधेपन के कारण उन में ऐसा कोई पाप नहीं है (यूहन्ना 9:41) जिसे क्षमा किया जाए। इस कारण वे ''पाप में मरे हुए'' नहीं हैं। पाप में मृत्यु बुरी इच्छाओं के आगे हार मानने पर होती है (याकूब 1:13-15)। वे पाप में मरे हुए नहीं हैं। इस कारण उन्हें जिलाए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है (कुलुस्सियों 2:13)। इसके अलावा वे ''परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास'' भी नहीं कर सकते हैं जिसका सम्बन्ध बपतिस्मे से है (कुलुस्सियों 2:12)।

बपतिस्मे की पूर्व शर्तों में वे शर्तें शामिल हैं, जिन्हें बच्चे पूरा नहीं कर सकते। बपतिस्मा लेने वालों को पहले सुसमाचार बताया जाना (मरकुस 16:15, 16); वचन को सुनना और ग्रहण करना (प्रेरितों 2:41; 18:8); विश्वास करना (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 8:12; 18:8); मन फिराना (प्रेरितों 2:38); और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार

करना आवश्यक है (रोमियो 10:9, 10; 1 तीमुथियुस 6:12)।

बपतिस्मा लेने वालों के लिखित उदाहरण पुरुषों और स्त्रियों के थे न कि नवजात शिशुओं के। ये वे लोग थे (प्रेरितों 8:12) जो परमेश्वर से अच्छे विवेक के लिए विनती कर रहे थे (1 पतरस 3:21)। नवजात शिशु ये बातें नहीं कर सकते, इसलिए वे बपतिस्मा लेने के लिए योग्य पात्र नहीं है।

नवजात शिशुओं के बपतिस्मे में एक और तर्क इस बात पर आधारित है कि घराने के लोगों द्वारा बपतिस्मा लिए जाने में नवजात शिशुओं का बपतिस्मा भी हुआ था। यह इस बात को मान लेना है कि घरों के सब लोग नवजात हैं। लिखित घरानों के बपतिस्मों के संदर्भों से संकेत मिलता है कि उन में नवजात शिशु नहीं थे।

(1) प्रेरितों 2:36-41. इस्राएल के घराने के लोगों को *मन फिराने* और बपतिस्मा लेने का निर्देश दिया गया था। उन्होंने पूछा था कि वे क्या करें। बपतिस्मा लेने वालों ने वचन को ग्रहण किया था। नवजात शिशुओं ने इन कार्यों को नहीं कर सकना था और वे उन बपतिस्मा लेने वालों में शामिल नहीं होने थे।

(2) प्रेरितों 10. कुरनेलियुस का घराना परमेश्वर का भय मानता था और पतरस का संदेश सुनने के लिए इकट्ठा हुआ था। क्षमा पाने के लिए उन्हें विश्वास करने को कहा गया था। उन्होंने वचन को सुना और ग्रहण किया (11:1)। फिर उन्हें पवित्र आत्मा मिला और वे अन्य-अन्य भाषाएं बोलने लगे। अन्त में उन्होंने पतरस से विनती की कि वे उनके साथ थोड़ी और देर के लिए रुक जाएं। इन बातों में नवजात शिशु नहीं थे।

(3) प्रेरितों 16:14, 15. लुदिया के घराने में नवजात शिशु नहीं होंगे, क्योंकि लूका ने उसके ''अपने घराने'' की बात की, और उसने ''हमारे घर'' के बजाय ''मेरे घर'' कहा। संकेत यह है कि उसका कोई पति नहीं था। परन्तु उसके घराने में सेवक और दास हो सकते हैं।

(4) प्रेरितों 16:23-34. पौलुस और सिलास ने फिलिप्पी के दारोगा को बताया कि उद्धार पाने के लिए उसे और उसके घराने को विश्वास करना आवश्यक था। फिर उसने घर के सब लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। स्पष्टतया इन में उद्धार पाने के ढंग की यीशु की शिक्षा भी थी (मरकुस 16:15, 16)। इसके बाद दारोगे ने और उसके सारे घराने ने विश्वास करके बपतिस्मा लिया। फिर वे आनन्दित हुए। पौलुस ने नवजात शिशुओं को प्रभु का वचन नहीं सुनाया होगा न ही वे विश्वास करने के योग्य होने थे, परन्तु उस ने ''सारे घर के लोगों को'' वचन सुनाया।

(5) प्रेरितों 18:8. क्रिसपुस (जिसे पौलुस ने स्वयं बपतिस्मा दिया था; 1 कुरिन्थियों 1:14), ने अपने सारे घराने समेत वचन सुना और प्रभु में विश्वास लाया। नवजात शिशुओं में विश्वास करने की क्षमता नहीं होती।

(6) 1 कुरिन्थियों 1:16. पौलुस ने लिखा कि उसने स्तिफनास के घराने को बपतिस्मा दिया था। यहां नवजात शिशु नहीं थे, क्योंकि उसके घराने के लोग ''पवित्र लोगों की सेवा के लिए तैयार रहते हैं'' (1 कुरिन्थियों 16:15)।

बाइबल में आरम्भिक कलीसिया में नवजात शिशुओं को बपतिस्मा दिए जाने का कोई उदाहरण नहीं है। बपतिस्मे की पूर्व शर्तें नवजात बच्चों को बपतिस्मे की आवश्यकता या इसे लेने से बाहर करती हैं।

प्रासंगिकता

मसीह हम में

मसीही लोगों के जीवनों में मसीह के महत्व की समझ इस बात में देखी जाती है कि इन्हें एक-दूसरे से कैसे जोड़ा जाता है। मसीही लोगों के रूप में हमें मसीह के द्वारा परमेश्वर की योजना की समझ पाना आवश्यक है (2:2)। हमें मसीह में (2:6) वैसे चलना आवश्यक है, जैसे वे लोग चलते हैं जो उसके साथ जीवित हैं (2:13) और जो उसके साथ इस प्रकार से जुड़े हैं, जैसे बढ़ने के लिए वह हमारा सिर हो (2:19)। यीशु का वचन हमारे अन्दर वास करना आवश्यक है (3:16)। दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध पर आधारित होने आवश्यक हैं: पत्नियां अपने पतियों के साथ वैसे रहें जैसे ''प्रभु में उचित है'' (3:18); बच्चे अपने माता पिता की आज्ञा मानें, ''क्योंकि प्रभु इससे प्रसन्न होता है'' (3:20); दास ''परमेश्वर के भय से'' अपने स्वामियों की आज्ञा मानें (3:22); और स्वामी दासों के साथ अच्छा व्यवहार करें, यह जानते हुए कि ''स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है'' (4:1)। हर सेवा दिल से की जाए, ऐसे जैसे वह सेवा मसीह के लिए की जा रही हो (3:23)।

मनुष्यों के नियमों को मानने से इनकार करना (2:8)

हमें याद रखना आवश्यक है कि बुद्धि और ज्ञान का सच्चा स्रोत यीशु ही है। मनुष्यों की परम्पराएं धोखा देने वाली हैं। यदि मसीही व्यक्ति मनुष्य की बुद्धि और ज्ञान की ओर चला जाता है तो वह जीवन के शुद्ध जल से दूर हो जाता है, जो मनुष्य की गंदगी भरी, कीचड़ भरी सोच से प्राण को बहाल करता है। परमेश्वर ने यिर्मयाह पर प्रकट किया कि इस्राएल उससे अर्थात बहते जल के सोते से दूर होकर टूटे हुए हौदों में चला गया है, जिनमें जल नहीं है (यिर्मयाह 2:13)।

मनुष्यों के धर्मसार, व्यवस्थाएं और परम्पराएं उसके खेत की झाड़ियों और कांटों जैसे हैं जिन्हें अच्छी उपज पाने के लिए निकाला जाना आवश्यक हैं। विवेक उस प्रदूषण की तरह है जो जल के शुद्ध चश्मे में घुस आया है या चंगाई देने वाली दवाई में मिलाए गए ज़हर जैसा है। केवल यीशु की खरी शिक्षा को ही मसीही लोगों द्वारा माना जाना आवश्यक है। केवल यही उद्धार कर सकती है।

यीशु सम्पूर्ण परमेश्वर है (2:9)

यीशु किसी भी प्रकार से पिता से कम नहीं है। वह सारी मनुष्यजाति से कहीं श्रेष्ठ है। इस कारण उसे अत्यधिक सम्मान और आदर दिखाया जाना चाहिए। वह आराधना के योग्य है। चौबीस प्राचीन मेमने अर्थात यीशु के आगे झुक गए (प्रकाशितवाक्य 5:8) और स्वर्ग की सारी सेनाओं के साथ उन्होंने उसे और पिता को आदर दिया (प्रकाशितवाक्य 5:11-14)। स्वर्गदूतों को उसकी आराधना करने के लिए समझाया जाता है (इब्रानियों 1:6)।

परमेश्वर के रूप में उसमें मनुष्यजाति में पाई जाने वाली सीमाएं नहीं हैं। उसके पास सारी शक्ति और अधिकार है (मत्ती 28:18), और उसकी उपस्थिति संसार में फैल जाती है ताकि वह अपने सब अनुयायियों के साथ जहां भी वे हैं, हो सके (मत्ती 28:20; देखें भजन संहिता 139:7-12)।

यीशु हमारी आवश्यकताओं के लिए सम्पूर्ण है (2:10)

सम्पूर्ण होने के कारण यीशु हमारी हर आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। अन्तिम कार्य जिससे यह सम्भव हुआ, वह क्रूस पर उसकी मृत्यु है (इब्रानियों 5:8, 9)। अपने जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उसने सब लोगों के लिए आशिषें सम्भव कर दीं। इन आशिषों में परमेश्वर के साथ मिलाप (2 कुरिन्थियों 5:18-20; कुलुस्सियों 1:20-22) पापों की क्षमा (मत्ती 26:28), और शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ (फिलिप्पियों 4:19), धार्मिकता (2 कुरिन्थियों 5:21) शामिल है। मसीही लोग दिलेरी के साथ कह सकते हैं, ''कि प्रभु, मेरा सहायक है'' (इब्रानियों 13:6)। उसने वचन दिया है, ''मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5)।

अपने अनुयायियों की देखभाल करने की उसकी योग्यता के कारण मसीही लोगों को उसमें पूर्ण किया जाता है। लोगों के लिए उसकी सम्भाल सहशर्त है। यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को पहले खोजने वालों को उन्हें आवयश्क वस्तुएं दी जाएंगी (मत्ती 6:33)। परमेश्वर धर्मी जीवन जीने वालों से किसी भी भली वस्तु को रख न छोड़ेगा (भजन संहिता 84:11)।

यीशु ने हमारे लिए उपाय किया है (2:11-13)

मसीही लोग यीशु में पूर्ण हैं, क्योंकि उसने वह सब किया है जिसकी हमें आवश्यकता है। वह हमारे लिए आत्मिक खतना होना, नया जीवन और क्षमा को सम्भव बनाता है।

(1) आत्मिक खतना, सबने पाप किया है (रोमियों 3:23)। इसलिए मसीही बनने से पहले हर कोई पाप के साथ गंदा हुआ है। व्यक्ति के आज्ञा मानकर उत्तर देने पर यीशु उसकी हर आत्मिक गंदगी को शुद्ध कर देता है। जिस प्रकार खतने में शरीर से मांस उतार दिया जाता है, वैसे ही मसीह व्यक्ति के जीवन में पापपूर्ण कार्य नहीं रहने चाहिए। मसीहा उसके मसीही बनने पर पूरी तरह से बदलाव आना आवश्यक है; वह पाप की सेवा के अपने जीवन को छोड़कर यीशु की सेवा वाले जीवन का आरम्भ करता है।

(2) *नया जीवन।* मसीही बनने से पहले व्यक्ति आत्मिक रूप में पाप में मरा हुआ होता है। परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास करने के द्वारा उसे बपतिस्मा लेने पर आत्मिक रूप में जीवित किया जाता है। उसके पिछले जीवन की बुरी आदतें और व्यवहार बंद करके एक नया जीवन आरम्भ करना आवश्यक है (रोमियों 6:4)। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में भागीदारी केवल तभी होती है यदि इससे यीशु को एक नया जीवन समर्पित हो जाए। मसीही बनने वाले के लिए बदसूरत सुंडी से सुन्दर तितली में परिवर्तित होने की तरह बदल जाना आवश्यक है (रोमियों 12:2)।

(3) *क्षमा।* व्यक्ति के नया जीवन पा लेने पर परमेश्वर उसके सारे अपराधों को, फिर कभी न याद करने के लिए, क्षमा कर देता है (इब्रानियों 8:12)। क्षमा पाने वाले व्यक्ति के मन पर अपने पिछले पाप के कारण अपने आप को दोषी ठहराने का भार नहीं होना चाहिए, जिससे वह पछताए और मायूस हो। पौलुस ने इसे इस प्रकार से कहा है: ''जो बातें पीछे रह गई हैं, उनको भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह

इनाम पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:13, 14)। क्षमा मिलने की समझ व्यक्ति को और समर्पण के लिए उकसाती है। लगातार क्षमा पाने के लिए मसीही व्यक्ति के लिए ज्योति में चलना आवश्यक है (1 यूहन्ना 1:7)। उसके लिए आवश्यक है कि जब वह पाप करे तो मन फिराकर परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करे (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।

यीशु हमारा सब कुछ है। वह परमेश्वर है। हम उसी में पूर्ण किए जाते हैं क्योंकि वह हमारी हर आत्मिक आवश्यकता को पूरा करता है।

यीशु ने व्यवस्था को सामने से हटा दिया (2:14, 15)

यीशु ने व्यवस्था को सामने से हटा दिया (2:14) क्योंकि यह हमारे पापों को हटाने के लिए निर्बल और बेकार थी (रोमियों 8:3; इब्रानियों 7:18, 19)। व्यवस्था ने इसे तोड़ने वालों पर श्राप दिया (गलातियों 3:10)। सबने पाप किया है, इस कारण सब श्राप के अधीन हैं (रोमियों 3:23)। मसीह ने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ा लिया है (गलातियों 3:13)।

जहां व्यवस्था बिना दया के थी (इब्रानियों 10:28), वहीं नई वाचा के अधीन दया दी गई है (इब्रानियों 8:12)। अनुग्रह व्यवस्था के द्वारा नहीं आया (गलातियों 5:4), बल्कि यीशु ने अनुग्रह और सच्चाई दी (यूहन्ना 1:14, 16, 17)। व्यवस्था से इसके अधीन लोगों को मृत्यु मिली (2 कुरिन्थियों 3:7)। आत्मिक जीवन केवल यीशु के द्वारा मिल सकता है (यूहन्ना 14:6; 1 यूहन्ना 5:11, 12)।

व्यवस्था के अधीन रहने की कोशिश करने वाले लोग श्राप के अधीन (देखें 2 कुरिन्थियों 3:9) और बिना धार्मिकता के हैं (गलातियों 2:21; 3:21)। जो यीशु में हैं, उन्हें उसके द्वारा मसीह बनाया जाता है (रोमियों 5:21; 2 कुरिन्थियों 5:21)।

शैतान को पापियों के ऊपर शक्ति उनके पाप के कारण है (इब्रानियों 2:14)। क्षमा उपलब्ध करना और व्यवस्था को हटाकर यीशु ने शैतान और उसकी दुष्ट सेनाओं को हरा दिया है। मसीही लोगों को यीशु के द्वारा विजय प्राप्त होती है (1 कुरिन्थियों 15:56, 57)।

टिप्पणियां

[1]इन आशिषों के नाम क्रमशः रोमियों 3:24; 8:1, 39; 1 कुरिन्थियों 1:2, 4 (देखें 2 तीमुथियुस 1:9); 2 कुरिन्थियों 5:17, 19, 21; इफिसियों 1:7; 2:13; कुलुस्सियों 1:14; 2 तीमुथियुस 2:10; यूहन्ना 5:11 में दिए गए हैं। [2]1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 1:22; 4:15; 5:23; कुलुस्सियों 1:18. [3]राल्फ पी. मार्टिन, *कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 82. [4]वही, 81. [5]KJV में *sarx* का अनुवाद 147 बार ''फ्लेश'' दो बार ''कारनल,'' एक बार ''कारनली'' और एक बार ''फ्लेशली'' हुआ है। [6]एच. सी. जी. माउल, द *एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू द फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल स्कूल्स एंड कॉलेजेस (कैम्ब्रिजः यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट, 1902), 103. [7]वही। [8]आर. सी. लूकस, द *मैसेज ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोनः फुलनेस एंड फ्रीडम,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयः इंटरवर्सिटी प्रैस, 1980), 102. [9]हे, 94–95. [10]कारसन, *कोलोसियंस,* 67.

[11]ये शब्द *sunthaptō* (''के साथ दफ़नाए गए''; आयत 12); *sunegeirō,* (''के साथ जी उठे''; आयत 12); *suzoōpoieō* (''के साथ जीवित किए गए''; आयत 13) है। रोमियों 6:5, 8; फिलिप्पियों 3:10;

कुलुस्सियों 3:1; 2 तीमुथियुस 2:11 के साथ तुलना करें। [12]जॉन. ई. बरखर्ट, *वर्शिप* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1982), 131. [13]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 117, एन. 87. [14]*अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* 3रा संस्क. (2001), एस. वी. ''बेपटाइज़।'' [15]अर्नेस्ट कलेन, *ए कम्परिहेन्सिव एटाइमोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द इंग्लिश लैंग्वेज* (एमस्टरडम: एलसेवियर पब्लिशिंग कं.,1966), 1:147. [16]*द एंकर बाइबल डिक्शनरी,* सपा. डेविड नोयल फ्रीमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 1:583 में लार्स हार्टमन, ''बैपटिज़्म।'' [17]मैसी एच. शेफर्ड, जूनि., *इन्साइक्लोपीडिया इंटरनैशनल* (डेनबरी, कनेक्टिकट: लैक्सिकन पब्लिकेशंस, 1981), 378. [18]जे. बी. लाइटफुट, *नोट्स ऑन द एपिस्टल्स ऑफ़ सेंट पॉल: 1 एंड 2 थिस्सलोनीनियंस, 1 कोरिन्थियंस 1—7, रोमन्स 1—7, इफिसियंस 1:1-14,* थोरनएप्पल कमैंट्रीज़ (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1895; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1980), 296. [19]रॉबर्ट, जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हेल्पस फॉर ट्रांसलेटर्स (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1977), 57. [20]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: चेरियट विक्टर पब्लिशिंग, कुक कम्युनिकेशंस, 1989), 2:127.

[21]जेम्स डी. जी. डन, *द एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टु फिलेमोन,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996), 156. [22]अलब्रेट ओपके, *मैंपटो थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल, अनु. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 1:539. [23]बार्कले एम. न्यूमैन एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर्स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द रोमन्स* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1973), 53. [24]ए. एस. पीक, *एपिस्टल टू द कोलोसियंस,* द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामैंट, संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (न्यू यॉर्क: जॉर्ज एच. डोरन कं., 1897), 526. [25]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ़ एच. थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 513. [26]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., अनु. विलियम एफ़. अर्ंट एंड एफ़. विलबर गिंगरिच, संशो. और विस्तार एफ. विलबर गिंगरिच एंड फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1979), 663. [27]बाउर (2000), 819. [28]देखें जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 185; एंड कारसन, *कोलोसियंस,* 67. अन्य वचन देखें जहां कर्म कारक सम्बन्ध कारक मिलता है: मरकुस 11:22; रोमियों 3:22, 26; गलातियों 2:16, 20; 3:22; इफिसियों 3:12; फिलिप्पियों 1:27; 3:9; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13. [29]मेर्विन आर. विन्सेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1946), 3:168. [30]यही शब्द इफिसियों 1:19; 3:7; 4:16; फिलिप्पियों 3:21; कुलुस्सियों 1:29; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9, 11 में मिलता है।

[31]जे. इथल जोन्स, *द न्यू बाइबल कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 1048. [32]विलियम बार्कले, *द लैटर टू द फिलिपियंस, कोलोसियंस एंड थिसलोनियंस,* संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 140. [33]हरबर्ट एम. कारसन, *स्टैंड परफ़ैक्ट इन क्रिज़डम* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 110. [34]लुईस बी. रेडफोर्ड, *द एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड द एपिस्टल टू फिलेमोन,* वेस्टमिंस्टर कमैंट्रीज़ (लंदन: मेथ्युन एंड कं., 1931), 232. [35]रॉल्फ पी. मार्टिन, *कोलोसियंस: द चर्च'स लॉर्ड एंड द क्रिश्चियन'स लिबर्टी* (एक्सेटर, इंग्लैंड: पेटरनोस्टर प्रैस, 1972), 87. [36]ब्रेचर एंड निडा, 58. [37]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *बैपटिज़्म इन द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1962), 154. [38]*ए कमैंट्री ऑन द होली स्क्रिप्चर्स: क्रिटिकल, डॉक्ट्रिनल, एंड होमिलेटिकल, विद स्पेशल रेफरेंस टू द मिनिस्टरज़ एंड स्टुडेंट्स,* अनु. एम. बी. रिडुल, संपा. जॉन पीटर लेंज (एडिनबर्ग: टी. एंड. टी क्लार्क, 1870), 7:46 में कार्ल ब्रॉउन, ''द एपिस्टल ऑफ पॉल टू द कोलोसियंस।'' [39]एडुअर्ड शवेज़र, *द लैटर टू द कोलोसियंस: ए कमैंट्री,* अनु. एंड्रयू चेस्टर (ज़्यूरिच: बेनज़ाइगर वरलग, 1976; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: अग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस,1982), 146. [40]जे. ग्रेशम मैकन, *न्यू टैस्टामैंट ग्रीक फ़ॉर बिगिनर्स* (टोरंटो: कोलिर-मैकमिलन, 1951), 12.

[41]देखें रोमियों 5:15-18, 20; 11:11, 12; 2 कुरिन्थियों 5:19; गलातियों 6:1; इफिसियों 1:7; 2:1, 5. [42]बाउर (2000), 770. [43]वही, 954. [44]पीटर टी. ओ'ब्रायन, *कोलोसियंस, फिलेमोन,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 44 (वाको, टैक्ससः वर्ड बुक, 1982), 119. [45]ब्रेचर एंड निडा, 60. [46]बाउर (2000), 290. [47]वही, 1083. [48]वही, 254. [49]ई. के. सिम्पसन एंड एफ़. एफ़. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल्स टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 238. [50]हैंड्रिक्सन, 120-21.

[51]वही, 121, एन. 90. [52]कारसन, *कोलोसियंस,* 69. [53]देखें निर्गमन 34:22-25; आयत 10:9; 11:1-40; गिनती 10:10; 29:6; व्यवस्थाविवरण 5:12-15; 2 इतिहास 8:13. [54]लाइटफुट *कोलोसियंस,* 189. [55]कारसन, *कोलोसियंस,* 69. [56]बाउर (2000), 344. [57]वही, 28-29. [58]एच. डरमोट मॅकडोनल्ड, *कमैंट्री ऑन कोलोसियंस एंड फिलेमोन* (वाको, टैक्ससः वर्ड बुक्स, 1980), 86. [59]वही। [60]क्लिंटन ई. अरनोल्ड, *द कोलोसियंस सिंक्रेटिज़्म,* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक्स, 1996), 279.

[61]वही, 302. [62]वही, 281. [63]ब्रेचर एंड निडा, 63. [64]बाउर (2000), 915. [65]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा.गरहर्ड किट्टल, अनु. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1971), 7:135 मे एडुअर्ड श्वेज़र, ''*sarx.*'' [66]मॅक्डोनल्ड 102. [67]हैंड्रिक्सन, 116, एन. 86.

NIV में *SARX* (''शरीर'')

द न्यू इंटरनैशनल वर्ज़न (और 2001 का संशोधन, *टुडे'ज़ न्यू इंटरनैशनल वर्ज़न*) बिना सफ़ाई दिए बाइबली टेक्सट में ''पापपूर्ण स्वभाव'' डाल देता है। यूनानी शब्द *Sarx* जिसका अर्थ ''शरीर'' है कई बार NIV की तरह ''पापपूर्ण स्वभाव'' अर्थ देता है, परन्तु अधिकतर अनुवादों में नहीं।

NIV और TNIV में *Sarx* का अनुवाद कुलुस्सियों (2:11, 13) में दो बार ''पापपूर्ण स्वभाव'' किया गया है। एक टिप्पणी है ''या *शरीर*।'' उन्हें इस बात का श्रेय जाता है कि NIV में अन्य आयतों में *sarx* का अनुवाद अलग तरीके से ''शारीरिक देह'' (1:22); ''शरीर'' (1:24); ''वैयक्तिक रूप से'' (2:1); ''शरीर'' (2:5); ''अनात्मिक सोच'' (2:18); ''मनुष्य'' (2:23); ''सांसारिक'' (3:22) किया गया है। परन्तु ''पापपूर्ण स्वभाव'' इस्तेमाल होने पर यह अनुचित ढंग से में *sarx* को ही नहीं दिखाता है, बल्कि मनुष्य के स्वभाव की बाइबली अवधारणा के विपरीत है। निम्न वचनों की तुलना करें:

KJV		NASB	NIV	
रोमियों	7:5	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	7:18	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	7:25	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	8:3	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
		''पापी शरीर ''	''पापी शरीर''	''पापी मनुष्य''
		''शरीर''	''शरीर''	''पापी मनुष्य''
	8:4	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	8:5	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''

		''शरीर''	''शरीर''	''उस स्वभाव की इच्छा''
	8:6	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	8:7	''सांसारिक सोच''	''शरीर पर ध्यान''	''पापपूर्ण सोच''
	8:8	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	8:9	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	8:12	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
		''शरीर''	''शरीर''	(''यह'')
	8:13	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	13:14	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
1 कुरिन्थियों	5:5	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
गलातियों	5:13	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	5:16	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	5:17	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
		''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	5:19	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	5:24	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	6:8	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
		''शरीर''	''शरीर''	''वह स्वभाव''
इफिसियों	2:3	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
		''शरीर''	''शरीर''	(''इसका'')
	2:11	''शरीर''	''शरीर''	''जन्म से''
		''शरीर''	''शरीर''	''देह में''
कुलुस्सियों	2:11	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	2:13	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
2 पतरस	2:10	''शरीर''	''शरीर''	''पापपूर्ण स्वभाव''
	2:18	''शरीर की इच्छाएं''	''शरीर''	''पापपूर्ण मानवीय स्वभाव''